



Price per : 30

Qabr Walon Ki 25 Hikayat (Hindi)

# क़ब्र वालों की 25 हिक्कयात

(मअ क़ब्रिस्तान की दुआएं और म-दनी फूल)

अज: शैखे त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अत्तार क़दिरि २-जवी بانت كاتم الطيب

مكتبة الدینہ  
(محدث اسلامی)  
SC1286

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
 آمَابَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## किताब पढ़ने की दुआ

अज : शैखे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा

मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रजवी دامت بركاتهم ائمتنا

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये ان شاء الله عزوجل जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ  
 عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा : ऐ **अल्लाह** ! **हम पर इल्मो हिकमत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ-ज़मत और बुजुर्गी वाले** (المستطرف ج 1 ص 44 دار الفكر بيروت)

नोट : अव्वल आखिर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

ताल्लिबे गुमे मदीना

व बकीअ

व मफ़िरत



[www.dawateislami.net](http://www.dawateislami.net)

13 शब्बालुल मुकर्रम 1428 हि.

## क़ब्र वालों की 25 हिकायत

येह रिसाला ( **क़ब्र वालों की 25 हिकायत** )

शैखे तरीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रत अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी र-ज़वी ज़ियाई دامت بركاتهم ائمتنا ने उर्दू ज़बान में तहरीर फ़रमाया है ।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ करवाया है । इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअए मक्तूब, ई-मेईल या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबिता : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाजा-1,

अहमद आबाद, गुजरात, फ़ोन : 079-25391168

MO. 09374031409

E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
مَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## क़ब्र वालों की 25 हिकायात<sup>1</sup>

शैतान लाख सुस्ती दिलाए, येह रिसाला (48 सफ़हात) आख़िर

तक पढ़ लीजिये إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ ईमान ताज़ा हो जाएगा ।

### ﴿1﴾ 560 क़ब्रों से अज़ाब उठ गया

हज़रते अल्लामा अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अहमद मालिकी कुरतुबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي नक़ल करते हैं : हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي की ख़िदमते बा ब-र-कत में हाज़िर हो कर एक औरत ने अर्ज़ की : मेरी जवान बेटी फ़ौत हो गई है, कोई तरीक़ा इर्शाद हो कि मैं उसे ख़्वाब में देख लूं। आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने उसे अमल बता दिया। उस ने अपनी मर्हूमा बेटी को ख़्वाब में तो देखा, मगर इस हाल में देखा कि उस के बदन पर तारकोल (या'नी डामर) का लिबास, गरदन में जन्जीर और पाउं में बेड़ियां हैं ! येह हैबतनाक मन्ज़र देख कर वोह औरत कांप उठी ! उस ने दूसरे दिन येह ख़्वाब हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي को सुनाया, सुन कर आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ बहुत मग़मूम हुए। कुछ अर्से बा'द हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي ने ख़्वाब में एक लड़की को देखा, जो जन्नत में एक तख़्त पर अपने सर لَدَيْنَهُ

1 : येह बयान अमीरे अहले सुन्नत دَاعِقَاتُ بَرَكَاتِهِمُ الْعَالِيَةِ ने तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक वा 'वते इस्लामी के आलामी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना के अन्दर हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ (10 शा'बानुल मुअज़्ज़म सि. 1431 हि. / 22-7-10) में फ़रमाया था। तरमीम व इज़ाफ़े के साथ तहरीरन हाज़िर ख़िदमत है।

मजलिसे मक-त-बतुल मदीना

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शख्स मुझ पर दुरूद पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया ।  
(त-बरानी)

पर ताज सजाए बैठी है । आप حُفْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ को देख कर वोह कहने लगी : “मैं उसी ख़ातून की बेटी हूँ, जिस ने आप को मेरी हालत बताई थी ।” आप حُفْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने फ़रमाया : उस के बकौल तो तू अज़ाब में थी, आख़िर येह इन्क़लाब किस तरह आया ? मर्हूमा बोली : क़ब्रिस्तान के करीब से एक शख्स गुज़रा और उस ने मुस्तफ़ा जाने रहमत, शम्फ़ बज़्मे हिदायत, नोशाए बज़्मे जन्नत, मम्बए जूदो सखावत, सरापा फ़ज़्लो रहमत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर दुरूद भेजा, उस के दुरूद शरीफ़ पढ़ने की ब-र-कत से **اَللّٰهُ** ने हम पांच सो साठ<sup>560</sup> क़ब्र वालों से अज़ाब उठा लिया । (ماخوذاً التذكرة فى احوال الموتى وأمور الآخرة ج 1 ص 74)

बसूए कूए मदीना बढ़ो दुरूद पढ़ो

जो तुम को चाहिये जन्नत पढ़ो दुरूद पढ़ो

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

❖ **बुजुर्ग की दुआ से सारा क़ब्रिस्तान बख़्शा गया**

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा, दुरूद शरीफ़ की बड़ी ब-र-कत है और वोह भी किसी आशिके रसूल की ज़बान से पढ़ा जाए तो उस की शान ही कुछ और होती है, हो सकता है वोह कोई **اَللّٰهُ** का मक्बूल बन्दा हो कि जिस के क़ब्रिस्तान से गुज़रने और दुरूद शरीफ़ पढ़ने की ब-र-कत से **560** मुर्दों से अज़ाब उठा लिया गया । अपने अज़ीजों की क़ब्रों पर आशिकाने रसूल को बसद एह्तिराम ले जाना, उन से वहां ईसाले सवाब करवाना यकीनन नफ़ बख़्शा है । **اَللّٰهُ** वालों के क़दमों की ब-र-कतों के क्या कहने ! हज़रते सय्यिदुना शैख़ इस्माईल हज़रमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى क़ब्रिस्तान से गुज़रे और एक

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे । (त-बरानी)

क़ब्र के करीब खड़े हो कर बहुत रोए फिर थोड़ी देर बा'द बे साख़्ता हंसने लगे ! जब उन से इस की वजह पूछी गई तो फ़रमाया : मैं ने देखा कि इस क़ब्रिस्तान वालों पर अज़ाब हो रहा है तो मैं ने इन के लिये **अल्लाह** तआला से आहो ज़ारी (करते हुए ख़ूब रो रो कर दुआए मग़ि़रत) की, तो मुझ से कहा गया कि जाओ हम ने इन लोगों के बारे में तुम्हारी शफ़ाअत क़बूल कर ली । (येह फ़रमा कर कोने में बनी हुई एक क़ब्र की तरफ़ इशारा कर के फ़रमाया :) उस क़ब्र वाली औरत बोली कि ऐ फ़कीह इस्माईल ! मैं एक गाने बजाने वाली औरत थी, क्या मेरी भी मग़ि़रत हो गई ? तो मैं ने कहा कि हां और तू भी इन्हीं (बख़्शे जाने वालों) में है । येही चीज़ मेरी हंसी का बाइस हुई । (شَرَحُ الصُّدُور ص २०६)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी मग़ि़रत हो ।

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام की भी क्या ख़ूब शान है ! क़ब्रों के हालात इन पर ज़ाहिर हों, क़ब्र वालों से गुफ़्त-गू येह फ़रमाएं, इन की दुआ व मुनाजात से अज़ाबात उठ जाएं, क़ब्र वाले इन से फ़रियादें करें तो येह हज़रात सुन लें और उन की इमदादें फ़रमाएं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें अपने औलिया के सदके बे हिसाब बख़्शे ।

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

हम को सारे औलिया से प्यार है

اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ अपना बेड़ा पार है

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे ।  
(कन्बुल उम्माल)

### तीन फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

हमें भी क़ब्रिस्तान जा कर मुसल्मानों की क़ब्रों की ज़ियारत करनी चाहिये कि येह सुन्नत, बाइसे यादे आख़िरत, अपने लिये ज़रीअए मग़िफ़रत और अहले कुबूर के लिये सबबे मन्फ़अत है । इस सिल्लिसले में तीन फ़रामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मुला-हज़ा हों : (1) मैं ने तुम को ज़ियारते कुबूर से मन्अ किया था, अब तुम क़ब्रों की ज़ियारत करो कि वोह दुन्या में बे रग़बती का सबब है और आख़िरत की याद दिलाती है । (इब्न साजह ज २ व २०२ हद़िथ १०७१) (2) जब कोई शख़्स ऐसी क़ब्र पर गुज़रे जिसे दुन्या में जानता था और उस पर सलाम करे तो वोह मुर्दा इसे पहचानता है और इस के सलाम का जवाब देता है । (तारीख़ बग़दाद ज ६ व १३ हद़िथ २१७०) (3) जो अपने वालिदैन दोनों या एक की क़ब्र की हर जुमुआ के दिन ज़ियारत करेगा, उस की मग़िफ़रत हो जाएगी और नेकूकार लिखा जाएगा । (शुएबु अ़िमान ज ६ व २०१ हद़िथ ७९०१)

### 3 फ़ारूके आ 'जम की क़ब्र वालों से गुफ़्त-गू !

अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़रूके आ 'जम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ एक क़ब्रिस्तान से गुज़रे तो कहा : “السَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا أَهْلَ الْقُبُورِ! (या 'नी ऐ क़ब्र वालो ! तुम पर सलामती हो) नई ख़बरें येह हैं कि तुम्हारी औरतों ने नई शादियां रचा लीं, तुम्हारे घरों में दूसरे लोग आबाद हो गए, और तुम्हारे माल तक्सीम हो चुके हैं ।” तो आवाज़ आई : ऐ उमर ! हमारी नई ख़बरें येह हैं कि हम ने जो नेक आ 'माल किये उन का बदला यहां मिला और जो राहे खुदा में ख़र्च किया उस का भी नफ़अ पाया और जो (दुन्या में) छोड़ आए उस में नुक़सान उठाया । (शरूहु الصّदूर व २०९)

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ بِرَحْمَتِكَ وَرَحْمَةِ رَسُوْلِكَ اَنْ تَرْحَمَ اَنْفُسَنَا وَرَحْمَتُكَ خَيْرٌ مِنْ رَحْمَتِنَا

امین بجاہ النبی الامین صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

फ़रमाने मुस्ताफ़ा ﷺ : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़फ़िरत है ।  
(जामेअ सगीर)

## गाफ़िल इन्सां साथ नेकी जाएगी !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رضى الله تعالى عنه की भी क्या शान है !  
**अब्बाह** عزّوجلّ की अता से आप رضى الله تعالى عنه क़ब्र वालों से भी गुफ़्त-गुफ़रमा लेते थे । बयान कर्दा हिकायत में खुसूसन मालो दौलत के हरीसों और आलीशान मकान और ऊंचे ऊंचे प्लाज़े बनाने वालों के लिये इब्रत के काफ़ी “म-दनी फूल” हैं । आह ! इन्सान दुन्या के जिस मकान को निहायत मज़बूत व मुस्तहक़म बनाता और उमदा से उमदा अन्दाज़ में सजाता है, वोह उस के पास हमेशा नहीं रहता, बिल आख़िर दूसरे लोग उस के अन्दर आबाद हो जाते हैं, उस की खून पसीने की कमाई और जम्अ शुदा पूंजी और “बेक बेलेन्स” पर भी दूसरे ही लोग क़ब्ज़ा जमाते हैं । हां मरने के बा'द सिर्फ़ वोही माल काम आता है जो राहे खुदा में खर्च किया गया हो । सूरए दुख़ान पारह 25 आयत नम्बर 25 ता 29 में इशादि रब्बानी है :

كَمْ تَرَكُوا مِنْ جَنَّتٍ وَعَيْونٍ ٢٥  
 وَرُؤُوعٍ وَمَقَامٍ كَرِيمٍ ٢٦ وَنَعْمَةَ  
 كَانُوا فِيهَا فَكَيْفَ يَنْ ٢٧ كَذَلِكَ ٢٨  
 وَأَوْرَشَاقٍ وَمَا آخِرِينَ ٢٩ فَمَا  
 بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَاءُ وَالْأَرْضُ  
 وَمَا كَانُوا مُنظَرِينَ ٣٠

ब२-ब-म९ कब्बुल इमाब :  
 कितने छोड़ गए बाग़ और चश्मे और खेत और उमदा मकानात और ने'मतें जिन में फ़ारिगुल बाल थे हम ने यूंही किया और उन का वारिस दूसरी क़ौम को कर दिया तो उन पर आस्मान और ज़मीन न रोए और उन्हें मोहलत न दी गई ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ جس کے پاس मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा  
उस ने जफ़ा की । (अब्दुर्रज़ाक)

दौलते दुन्या यहीं रह जाएगी

गाफ़िल इन्सां साथ नेकी आएगी

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَی مُحَمَّدٍ

क़ब्रिस्तान में सलाम का तरीक़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जब भी क़ब्रिस्तान की हाज़िरी का मौक़अ मिले इस तरह खड़े हों कि क़िब्ले की तरफ़ पीठ और क़ब्र वालों के चेहरों की तरफ़ मुंह हो, इस के बा'द तिरमिज़ी शरीफ़ में बयान कर्दा येह सलाम कहिये :

السَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا أَهْلَ الْقُبُورِ يَغْفِرُ اللَّهُ لَنَا وَلَكُمْ أَنْتُمْ سَلَفْنَا وَنَحْنُ بِالْآثَرِ  
तरजमा : “ऐ क़ब्र वाले ! तुम पर सलाम हो, **अल्लाह** हमारी और तुम्हारी मग़िफ़रत फ़रमाए, तुम हम से पहले आ गए और हम तुम्हारे बा'द आने वाले हैं।” (निरुल्लाह २४ व १०००) **☉** चेहरे की तरफ़ से सलाम अर्ज़ करने की हिक्मत बयान करते हुए मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : जियारते क़ब्र मथ्यित के मुवा-जहा में (या'नी चेहरे के सामने) खड़े हो कर हो, और उस (या'नी क़ब्र वाले) की पाइंती (या'नी क़दमों) की तरफ़ से जाए कि उस (या'नी साहिबे क़ब्र) की निगाह के सामने हो, सिरहाने से न आए कि उसे सर उठा कर देखना पड़े । (फ़तावा र-जविय्या “मुखर्रजा”, जि. 9, स. 532)  
**☉** ख़ूब रो रो कर अपनी और अहले कुबूर की मग़िफ़रत के लिये दुआ मांगिये, अगर रोना न आए तो रोने की सी सूरत बना लीजिये ।

क़ब्र पर फूल डालना

क़ब्र पर फूल डालना बेहतर है कि जब तक तर रहेंगे तस्बीह



फ़रमाने मुस्ताफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी ।  
(मजमउज़्ज़वाइद)

करेंगे और मय्यित का दिल बहलेगा । (رَدُّ الْمُحْتَار ج ٣ ص ١٨٤) ❀ यहीं जनाजे पर फूलों की चादर डालने में हरज नहीं । (बहारे शरीअत, जि. 1, स. 852, मक-त-बतुल मदीना) ❀ क़ब्र पर से तर घास नोचना न चाहिये कि उस की तस्बीह से रहमत उतरती है और मय्यित को उन्स हासिल होता है और नोचने में मय्यित का हक़ ज़ाएअ करना है । (رَدُّ الْمُحْتَار ج ٣ ص ١٨٤)

### क़ब्रिस्तान में क्या गौर करे ?

क़ब्रिस्तान की हाज़िरी के मौक़अ पर इधर उधर की बातों और ग़फ़लत भरे ख़यालों के बजाए फ़िक्रे मदीना या'नी अपना मुहा-सबा करते हुए अपनी मौत को याद कर के हो सके तो आंसू बहाइये और गुनाहों को याद कर के खुद को अज़ाबे क़ब्र से ख़ूब डराइये, तौबा कीजिये और येह तसव्वुर ज़ेहन में जमाइये कि जिस तरह आज येह मुर्दे अपनी अपनी क़ब्रों में अकेले पड़े हैं, अन्क़रीब मैं भी इसी तरह अंधेरी क़ब्र में तन्हा पड़ा होउंगा नीज़ हदीसे पाक के इन अल्फ़ाज़ को याद कीजिये : كَمَا تَدِينُ تُدَانُ या'नी जैसी करनी वैसी भरनी ।  
(الْجَامِعُ الصَّغِيرُ لِلْسُّيُوطِيِّ ص ٣٩٩ حديث ٦٤١١)

क़ब्र में मय्यित उतरनी है ज़रूर जैसी करनी वैसी भरनी है ज़रूर

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

### ❀ 4 ❀ गुलाब के फूल या अज़्दहे ?

हज़रते सय्यिदुना इमाम सुफ़यान बिन उयैना رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ  
फ़रमाते हैं : عِنْدَ ذِكْرِ الصَّالِحِينَ تَنْزَلُ الرَّحْمَةُ : या'नी नेक लोगों के ज़िक्र के

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बदबख्त हो गया। (इन्ने सुन्नी)

वक्त रहमते इलाही उतरती है। (حَلِيَةُ الْأُرَيْلِيَّةِ ج ٧ ص ٣٣٥ رقم ١٠٧٥٠)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** जब नेक बन्दों के तज़िकरे का येह हाल है तो जहां नेक बन्दे खुद मौजूद हों वहां नुजूले रहमत का क्या आलम होगा ! बेशक **अब्बाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे क़ब्रों में हों तब भी फ़ैज़ पहुंचाते हैं, और इन के पड़ोस में दफ़्न होने वालों के भी वारे न्यारे हो जाते हैं चुनान्चे दा 'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 561 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, "मल्फूज़ाते आ'ला हज़रत" सफ़हा 270 पर आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का इर्शाद है : मैं ने हज़रत मियां साहिब क़िब्ला قُدَسِ سِرُّهُ को फ़रमाते सुना : एक जगह कोई क़ब्र खुल गई और मुर्दा नज़र आने लगा, देखा कि गुलाब की दो शाखें उस के बदन से लिपटी हैं और गुलाब के दो फूल उस के नथनों (या'नी नाक के दोनों सूराखों) पर रखे हैं। उस के अज़ीजों ने इस ख़याल से कि यहां क़ब्र पानी के सदमे से खुल गई, दूसरी जगह क़ब्र खोद कर (मर्हूम की लाश को) उस में रखा, अब जो देखा तो दो अज़्दहे (या'नी दो बहुत बड़े सांप) उस के बदन से लिपटे अपने फनों से उस का मुंह भम्भोड़ (या'नी नोच) रहे हैं ! हैरान हुए। किसी साहिबे दिल से येह वाकिआ बयान किया, उन्हों ने फ़रमाया : वहां भी येह अज़्दहे ही थे मगर एक वलिय्युल्लाह के मज़ार का कुर्ब था, उस की ब-र-कत से वोह अज़ाब रहमत हो गया था, वोह अज़्दहे दरख़्ते गुल की शकल हो गए थे और उन के फन गुलाब के फूल। इस (या'नी मर्हूम) की ख़ैरियत चाहो तो वहीं ले जा कर दफ़्न करो। वहीं ले जा कर रखा फिर वोही

फरमाने मुस्फा صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह غَزُوخَل उस पर दस रहमतें भेजता है । (मुस्लिम)

दरख्ते गुल थे और वोही गुलाब के फूल ।

## मुर्दों को बुजुर्गों के पास दफ़न करो

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अपनी बरादरी में तदफ़ीन भी बेशक जाइज़ है मगर किसी वलिय्युल्लाह के कुर्ब में दो<sup>थ</sup> गज़ ज़मीन नसीब हो जाए तो मदीना मदीना । मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : अपने मुर्दों को बुजुर्गों के पास दफ़न करो कि इन की ब-र-कत के सबब उन पर अज़ाब नहीं किया जाता । هُمْ الْقَوْمُ لَا يَشْفَىٰ بِهِمْ جَلِيْسُهُمْ (या'नी) येह ऐसी क़ौम है जिस का हम नशीन (या'नी सोहबत में रहने वाला) भी महरूम नहीं रहता । व लिलाजा हदीस में फ़रमाया : (الْفُرْدَوْسُ بِمَأْتُوْرِ الْخَطَّابِ ج ١ ص ١٠٢ ح ٣٣٧) अपने मुर्दों को नेकों के दरमियान दफ़न करो ।

مَرُّنْ تَبَّابَا مَعْنِ اَيِّ لَوِغُو ! بَكْرِيْءُ پَاك لِي جَانَا

सहाबा और अहले बैत के साए में दफ़नाना

صَلُّوْا عَلٰى الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلٰى مُحَمَّدٍ

## ﴿5﴾ क़ब्रिस्तान के मुर्दे ख़्वाब में आ पहुंचे !

एक साहिब का मा'मूल था कि वोह क़ब्रिस्तान में आ कर बैठ जाते और जब भी कोई जनाज़ा आता उस की नमाज़ पढ़ते और शाम के वक़्त क़ब्रिस्तान के दरवाज़े पर खड़े हो कर इस तरह दुआएं देते : “(ऐ क़ब्र वालो !) खुदा तुम को उन्स अता करे, तुम्हारी गुरबत पर रहूम

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रहमत भेजेगा । (इन्ने असी)

करे, तुम्हारे गुनाह मुआफ़ फ़रमाए और नेकियां क़बूल करे ।” वोही साहिब फ़रमाते हैं : एक शाम (ब वक़्ते रुख़सत) मैं अपना क़ब्रिस्तान वाला मा'मूल पूरा न कर सका या'नी उन्हें दुआएं दिये बिगैर ही घर आ गया । मेरे ख़्वाब में एक कसीर मख़्लूक आ गई ! मैं ने उन से पूछा : आप लोग कौन हैं और क्यूं आए हैं ? बोले : हम क़ब्रिस्तान वाले हैं, आप ने आदत कर ली थी कि घर आते वक़्त हम को हदिय्या (या'नी तोहफ़ा) देते थे और आज न दिया । मैं ने कहा : वोह हदिय्या क्या था ? तो उन्होंने ने कहा : वोह हदिय्या दुआओं का था । मैं ने कहा : अच्छा, अब येह हदिय्या मैं तुम को फिर से दूंगा । इस के बा'द मैं ने अपने इस मा'मूल को कभी तर्क न किया ।

(شرحُ الصُّدُور ص ۲۲۶)

## रूहें घरों पर आ कर ईसाले सवाब का मुता-लबा करती हैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा मरने वाले अपनी क़ब्रों पर आने जाने वालों को पहचानते हैं, और उन्हें ज़िन्दों की दुआओं से फ़ाएदा पहुंचता है, जब ज़िन्दा लोगों की तरफ़ से ईसाले सवाब के तोहफ़े आना बन्द होते हैं, तो उन को आगाही हासिल हो जाती है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन्हें इजाज़त देता है तो घरों पर जा कर ईसाले सवाब का मुता-लबा भी करते हैं । मेरे आक़ा आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजहिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा र-ज़विय्या (मुखर्रजा) जिल्द 9 सफ़हा 650 पर नक्ल करते हैं : “ग़राइब” और “ख़ज़ाना” में मन्कूल है कि मुअमिनीन की रूहें हर शबे जुमुआ (या'नी जुमा'रात और जुमुआ की दरमियानी रात), रोज़े ईद, रोज़े आशूरा और शबे बराअत को अपने घर आ कर बाहर खड़ी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पड़े। (हाकिम)

रहती हैं और हर रूह ग़मनाक बुलन्द आवाज़ से निदा करती (या'नी पुकार कर कहती) है कि ऐ मेरे घर वालो ! ऐ मेरी औलाद ! ऐ मेरे क़राबत दारो ! (हमारे ईसाले सवाब की निय्यत से) स-दक़ा (ख़ैरात) कर के हम पर मेहरबानी करो ।

है कौन कि गिर्या करे या फ़ातिहा को आए

बेकस के उठाए तेरी रहमत के भरन फूल (हदाइके बख़िश शरीफ़)

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَي مُحَمَّد

### ﴿6﴾ ईसाले सवाब की हाथों हाथ ब-र-कत

ईसाले सवाब की हाथों हाथ ब-र-कत देखने के ज़िम्न में हज़रते अल्लामा अली क़ारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَارِي نَقْل फ़रमाते हैं : हज़रते शैख़ अक्बर मुह्युद्दीन इब्ने अ-रबी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ एक जगह दा'वत में तशरीफ़ ले गए, आप ने देखा कि एक नौ जवान खाना खा रहा है, जिस के मु-तअल्लिक़ येह मशहूर था कि येह साहिबे कश्फ़ है, जन्नत और दोज़ख़ का भी इस को कश्फ़ होता है, खाना खाते हुए अचानक वोह रोने लगा । वजह दरयाफ़्त करने पर कहा कि मेरी मां जहन्म में जल रही है । हज़रते सय्यिदुना शैख़ अक्बर मुह्युद्दीन इब्ने अ-रबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के पास येही कलिमए तय्यिबा सत्तर हज़ार मर्तबा पढ़ा हुवा महफूज़ था, आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने उस की मां को दिल में ईसाले सवाब कर दिया । फ़ौरन वोह नौ जवान हंस पड़ा और बोला कि अपनी मां को जन्नत में देखता हूं ।

(مِرْقَاةُ الْمَفَاتِيحِ ج ٣ ص ٢٢٢ تحت الحديث ١١٤٢ دارالفكر بيروت)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरुद पढ़ो कि तुम्हारा दुरुद मुझ तक पहुंचता है ।  
(त-बरानी)

**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! वोह “नौ जवान”**  
कश्फ़ के ज़रीए ग़ैब के हालात देख लेता था ! सय्यिदुना इब्ने अ-रबी  
عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِي के ईसाले सवाब करने पर पांसा ही पलट गया, जिस हृदीसे  
पाक में सत्तर हज़ार कलिमए तय्यिबा पढ़ने की फ़ज़ीलत है वोह येह  
है : “बेशक जिस शख़्स ने सत्तर हज़ार मर्तबा कहा : لَا إِلَهَ إِلَّا اللّٰهُ  
اللّٰهُ اعْلَمُ उस की मग़िफ़रत फ़रमाएगा और जिस के लिये येह कहा  
गया उस की भी मग़िफ़रत फ़रमाएगा ।” (مَرْقَاةُ الْمَفَاتِيحِ ج ٣ ص ٢٢٢ تحت الحديث ١١٤٢)  
हमें भी चाहिये कि जिन्दगी में कम अज़ कम एक बार हम भी सत्तर हज़ार  
कलिमए तय्यिबा पढ़ लें । जिन के अज़ीज़ रिश्तेदार फ़ौत हो जाएं उन को  
चाहिये कि येह विर्द कर के ईसाले सवाब कर दें । एक दिन और एक ही  
निशस्त में पढ़ना ज़रूरी नहीं, थोड़े थोड़े कर के भी पढ़ सकते हैं, अगर  
रोज़ाना 100 मर्तबा पढ़ लें तब भी दो बरस से पहले पहले सत्तर हज़ार  
की ता'दाद पूरी हो जाएगी ।

*मेरे आ 'माल का बदला तो जहन्नम ही था*

*में तो जाता मुझे सरकार ने जाने न दिया* (सामाने बख़्शिश)

**मरने वाले को ख़्वाब में बीमार देखने की ता 'बीर**

किसी फ़ौत शुदा को ख़्वाब के अन्दर गुस्से में, बीमार या नंगा  
वग़ैरा देखने की ता'बीर आ़म तौर पर येही बयान की जाती है कि मुर्दा  
अज़ाब में मुब्तला है, लिहाज़ा किसी मुसल्मान को مَعَادِ اللّٰهِ कोई इस हाल  
में देखे तो उसे चाहिये कि मर्हूम को ईसाले सवाब करे । चुनान्चे दा'वते

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर एक दुरूद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह عزوجل उस के लिये एक किरात अज़्र लिखता है और किरात उद्दुद पहाड़ जितना है । (अब्दुर्ज्जाक)

इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 561 सफ़हात पर मुशतमिल किताब, “मल्फूज़ाते आ 'ला हज़रत (मुखर्जा)” सफ़हा 139 से ईमान अफ़रोज़ मा'लूमाती “अर्ज़ व इर्शाद” मुला-हज़ा फ़रमाइये : अर्ज़ : हुज़ूर ! एक शख़्स ने अपनी लड़की के इन्तिक़ाल के बा'द देखा कि वोह अलील (या'नी बीमार) और बरहना है । येह ख़्वाब चन्द बार देख चुका है । इर्शाद : कलिमाए तय्यिबा (या'नी हर बार لَآ اِلَهَ اِلَّا اللهُ) सत्तर हज़ार (70,000) मर्तबा मअ दुरूद शरीफ़ पढ़ कर बख़्शा दिया जाए اِنْ شَاءَ اللهُ पढ़ने वाले और जिस को बख़्शा (या'नी ईसाले सवाब किया) है, दोनों के लिये ज़रीअए नजात होगा और पढ़ने वाले को दूना सवाब होगा और अगर दो<sup>2</sup> को बख़्शेगा तो तिगना (या'नी तीन गुना) इसी तरह करोड़ों बल्कि जमीअ (या'नी तमाम) मुअमिनीन व मुअमिनात को ईसाले सवाब कर सकता है, इसी निस्बत से इस पढ़ने वाले को सवाब होगा ।

अल्लाह की रहमत से तो जन्नत ही मिलेगी

ऐ काश ! महल्ले में जगह उन के मिली हो (बसाइते बख़्शिश)

﴿7﴾ आग का शो 'ला ले कर आया, अगर.....

एक आदमी ने अपने मर्हूम भाई को ख़्वाब में देख कर पूछा : क़ब्र में दफ़नाने के बा'द क्या हुवा ? जवाब दिया : एक शख़्स आग का शो 'ला ले कर मेरी तरफ़ आया, अगर दुआ करने वाला मेरे लिये दुआ न करता तो वोह मुझे मार ही देता । (شرحُ الصُّدُور ص 281)

ज़िन्दों की दुआओं से मुर्दे बख़्शे जाते हैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा, फ़ौत शुदा मुसल्लमानों

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عُزَّوَجَلَّ उस पर सो  
रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। (त-बरानी)

को जिन्दों की दुआओं का बेहद फ़ाएदा पहुँचता है, चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 419 सफ़हात पर मुशतमिल किताब, "म-दनी पंजसूरह" सफ़हा 397 पर है : मदीने के ताजदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने मग़िफ़रत निशान है : मेरी उम्मत गुनाह समेत क़ब्र में दाख़िल होगी और जब निकलेगी तो बे गुनाह होगी क्यूं कि वोह मुअमिनीन की दुआओं से बख़्श दी जाती है।

(الْمُعْجَمُ الْأَوْسَطُ ج ١ ص ٥٠٩ حديث ١٨٧٩)

मुझ को सवाब भेजो, दुआएं हज़ार दो

गो क़ब्र में उतारा, न दिल से उतार दो

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

❷❸ मर्हूम वालिद साहिब ने ख़्वाब में

आ कर कहा कि.....

رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ  
हज़रते सय्यिदुना इमाम सुफ़यान बिन उयैना

का बयान है : जब मेरे वालिद साहिब का इन्तिक़ाल हो गया तो मैं ने बहुत आहो बुका की (या'नी ख़ूब रोया धोया) और उन की क़ब्र पर रोज़ाना हाज़िरी देने लगा फिर रफ़ता रफ़ता कुछ कमी आ गई। एक रोज़ वालिदे मर्हूम ने ख़्वाब में तशरीफ़ ला कर फ़रमाया : ऐ बेटे ! तुम ने क्यूं ताख़ीर की ? मैं ने पूछा : क्या आप को मेरे आने का इल्म हो जाता है ? फ़रमाया : "क्यूं नहीं, मुझे तुम्हारी हर हाज़िरी की ख़बर हो जाती थी और मैं तुम्हें देख कर खुश होता था नीज़ मेरे पड़ोसी मुर्दे भी तुम्हारी दुआ से राज़ी होते थे।" चुनान्चे इस ख़्वाब के बा'द मैं ने पाबन्दी से वालिद साहिब की क़ब्र पर जाना शुरू कर दिया। (شَرْحُ الصُّدُور ص ٢٢٧)



फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हातर है ।

(अबू या'ला)

## 9 क़ब्र में मुर्दा डूबतों की तरह होता है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि क़ब्र वाले आने जाने वाले रिश्तेदारों और दोस्त दारों की आमद और उन की दुआ और ईसाले सवाब पर खुश होते हैं और जो रिश्तेदार नहीं जाता उस के मुन्तज़िर रहते हैं । सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इशदि मुश्कबार है : मुर्दे का हाल क़ब्र में डूबते हुए इन्सान की मानिन्द है कि वोह शिद्दत से इन्तिज़ार करता है कि बाप या मां या भाई या किसी दोस्त की दुआ इस को पहुंचे और जब किसी की दुआ उसे पहुंचती है तो उस के नज़दीक वोह दुन्या व मा फ़ीहा (या'नी दुन्या और इस में जो कुछ है) से बेहतर होती है । **اللَّهُ** ك़ब्र वालों को उन के ज़िन्दा मु-तअल्लिकीन की तरफ़ से हदिय्या किया हुवा सवाब पहाड़ों की मानिन्द अता फ़रमाता है, ज़िन्दों का हदिय्या (या'नी तोहफ़ा) मुर्दों के लिये “दुआए मग़िफ़रत करना है ।”

(شُعَبُ الْإِيمَانِ ج ٦ ص ٢٠٣ حدیث ٧٩٠٥)

मां बाप की क़ब्रें अगर बीच क़ब्रिस्तान में हों तो.....

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाकेई वोह बड़ा ही खुश नसीब बेटा है जो अपने वालिदैने मर्हूमैन की क़ब्रों की ज़ियारत को जाया करे । येह मस्अला याद रखिये कि दूसरी क़ब्रों पर पाउं रखे बिगैर मां बाप वगैरा की क़ब्रों तक न जा सकते हों तो दूर ही से फ़ातिहा पढ़ना होगा, क्यूं कि बुजुर्गों के मज़ारों या मां बाप की क़ब्रों पर जाना मुस्तहब काम है और मुसल्मान की क़ब्र पर पाउं रखना हराम, मुस्तहब काम के लिये हराम

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा ।  
(कन्जुल उम्माल)

काम की शरीअत में इजाज़त नहीं । मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن **फ़तावा र-ज़विय्या** (मुखर्रजा) जिल्द 9 सफ़हा 524 पर इर्शाद फ़रमाते हैं : “इस का लिहाज़ लाज़िम है कि जिस क़ब्र के पास बिल खुसूस जाना चाहता है उस तक (ऐसा) क़दीम (या'नी पुराना) रास्ता हो, (जो कि क़ब्रें मिटा कर न बनाया गया हो) अगर क़ब्रों पर से हो कर जाना पड़े तो इजाज़त नहीं, सरे राह दूर खड़े हो कर एक क़ब्र की तरफ़ मु-तवज्जेह हो कर ईसाले सवाब कर दे ।”

**क़ब्र के पास बैठ कर तिलावत करने के बारे में.....**

बारगाहे र-ज़विय्यत में होने वाले “सुवाल व जवाब” मुला-हज़ा हों, सुवाल : “क़ब्रिस्तान में कलाम शरीफ़ या पंजसूरह क़ब्र के नज़्दीक बैठ कर तिलावत करना जाइज़ है या नहीं ?” अल जवाब : “क़ब्र के पास तिलावत याद पर ख़्वाह देख कर हर तरह जाइज़ है (कि वहां तिलावत से रहमत उतरती और मय्यित का दिल बहलता है) जब कि लि वज्हिल्लाह (या'नी अल्लाह तआला की रिज़ा के लिये) हो, और क़ब्र पर न बैठे, न किसी क़ब्र पर पाउं रख कर वहां पहुंचना हो, और अगर बे इस के (या'नी क़ब्र पर पाउं रखे बिगैर) वहां तक न जा सके तो क़ब्र के नज़्दीक तिलावत के लिये जाना हुराम है, बल्कि कनारे ही से जहां तक बे किसी क़ब्र को रौंदे जा सकता है, तिलावत करे ।”

(फ़तावा र-ज़विय्या “मुखर्रजा”, जि. 9, स. 524, 525)

### ﴿10﴾ नूरानी लिबास

एक बुजुर्ग ने अपने मर्हूम भाई को ख़्वाब में देख कर पूछा : क्या ज़िन्दा लोगों की दुआ तुम लोगों को पहुंचती है ? तो उन्होंने ने जवाब दिया :

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पड़े। (हाकिम)

“हां **اَللّٰهُ** کی کسَم ! वोह नूरानी लिबास की सूरत में आती है उसे हम पहन लेते हैं।” (شَرْحُ الصُّدُورِ ص ३००)

जल्वए यार से हो क़ब्र आबाद वहूशते क़ब्र से बचा या रब !

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

### ﴿11﴾ नूरानी त़बाक़

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा हम जो दुआ व ईसाले सवाब करते हैं वोह **اَللّٰهُ** کی रहमत से फ़ौत शुदा मुसलमानों को निहायत उम्दा शक्ल में पहुंचता है, लिहाज़ा हम को चाहिये कि अपने मर्हूम अज़ीज़ों बल्कि जुम्ला मुसलमानों को ईसाले सवाब करते रहें। “शर्हुस्सुदूर” में है : “जब कोई शख्स मय्यित को ईसाले सवाब करता है तो हज़रते सय्यिदुना जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام उसे नूरानी त़बाक़ (या'नी थाल) में रख कर क़ब्र के कनारे खड़े हो कर फ़रमाते हैं : “**ऐ क़ब्र वाले !** येह हदिय्या (या'नी तोहफ़ा) तेरे घर वालों ने भेजा है क़बूल कर।” येह सुन कर वोह खुश होता है और उस के पड़ोसी (मुर्दे) अपनी महरूमी पर ग़मगीन होते हैं।” (ऐज़न, स. 308)

क़ब्र में आह ! घुप अंधेरा है फ़ज़ल से कर दे चांदना या रब !

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

### ईसाले सवाब के 4 म-ढली फूल

मर्हूम की क़ब्र में नूर पैदा हो

(1) (वलिय्युल्लाह के मज़ार शरीफ़ या) किसी भी मुसलमान की क़ब्र की ज़ियारत को जाना चाहे तो मुस्तहब येह है कि पहले अपने मकान पर (गैरे मक्रूह वक़्त में) दो रकअत नफ़ल पढ़े, हर रकअत में सू-रतुल फ़ातिहा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे ।  
(कन्जुल उम्मा)

के बा'द एक बार आ-यतुल कुर्सी और तीन बार सू-रतुल इख़्लास पढ़े और इस नमाज़ का सवाब साहिबे क़ब्र को पहुंचाए, **अल्लाह** तआला उस फ़ौत शुदा बन्दे की क़ब्र में नूर पैदा करेगा और इस (सवाब पहुंचाने वाले) शख्स को बहुत ज़ियादा सवाब अता फ़रमाएगा ।

(फ़तावा आलमगीरी, जि. 5, स. 350)

### सब क़ब्र वालों को सिफ़ारिशी बनाने का अमल

(2) शफ़ीए मुजरिमान صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने शफ़ाअत निशान है : जो शख्स क़ब्रिस्तान में दाख़िल हुवा फिर उस ने सू-रतुल फ़ातिहा, सू-रतुल इख़्लास और सू-रतुत्तकासुर पढ़ी फिर येह दुआ मांगी : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने जो कुछ कुरआन पढ़ा उस का सवाब इस क़ब्रिस्तान के मुअमिन मर्दों और मुअमिन औरतों को पहुंचा । तो वोह सब के सब क़ियामत के रोज़ उस (या'नी ईसाले सवाब करने वाले) के सिफ़ारिशी होंगे ।  
(شَرَحُ الصُّدُورِ ص ۳۱)

### मुर्दों की गिनती के बराबर सवाब कमाने का तरीक़ा

(3) हदीसे पाक में है : “जो ग्यारह बार सू-रतुल इख़्लास पढ़ कर इस का सवाब मुर्दों को पहुंचाए, तो मुर्दों की गिनती के बराबर उसे (या'नी ईसाले सवाब करने वाले को) सवाब मिलेगा ।”

(جَمْعُ الْجَوَامِعِ لِلشُّيُوطِيِّ ج ۷ ص ۲۸۰ حديث ۲۳۱۰۲)

(4) इस तरह भी ईसाले सवाब किया जा सकता है : क़ब्रिस्तान में जाए तो **الحمد** शरीफ़ और **الم** से **مُفْلِحُونَ** तक और **أَيُّهَا الْكَرِيمُ** और **تَبَارَكَ الَّذِي** और **سُوْرَةُ يَس** और **أَمَّنَ الرَّسُوْلُ**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुज़्र पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे । (त-बरानी)

बारह या (मुकम्मल सूरह) **قُلْ هُوَ اللَّهُ** एक एक बार और **أَلَهُكُمْ التَّكَاثُرُ** बारह या सात या तीन बार पढ़े ।

(बहारे शरीअत, जि. 1, हिस्सा : 4, स. 849, मक-त-बतुल मदीना बाबुल मदीना कराची)

**भेजो ऐ भाइयो मुझे तोहफ़ा सवाब का**

**देखूँ न काश क़ब्र में, मैं मुंह अज़ाब का**

**صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ**

﴿12-13﴾ **गौसे पाक की “अपने इमाम”**

**के मज़ार पर हाज़िरी**

हमारे गौसे आ'ज़म **عليه رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم** “हम्बली” या'नी हज़रते सय्यिदुना इमाम **अहमद** बिन हम्बल **رضي الله تعالى عنه** के मुक़ल्लिद थे, गौसे पाक **رحمته الله تعالى عليه** क़ब्रिस्तान और **खुसूसन बुजुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْبَر** के मज़ारते तय्यिबात की ज़ियारत फ़रमाया करते थे । चुनान्वे हज़रते सय्यिदुना **शैख़ अली बिन हैती عليه رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْبَر** बयान करते हैं कि मैं ने हज़रते **शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी قَدَسَ سِرُّهُ النَّوْرَانِي** और **शैख़ बका बिन बतौ قَدَسَ سِرُّهُ النَّوْرَانِي** के हमराह हज़रते सय्यिदुना इमाम **अहमद** बिन हम्बल **رضي الله تعالى عنه** के मज़ारे फ़ाइजुल अन्वार की ज़ियारत की तो देखा कि हज़रते सय्यिदुना इमाम **अहमद** बिन हम्बल **رضي الله تعالى عنه** ने अपनी क़ब्रे अन्वर से निकल कर हज़रते **शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी قَدَسَ سِرُّهُ النَّوْرَانِي** से मुआ-नका किया (या'नी गले मिले) और आप को ख़िलअत (या'नी इज़्ज़त अफ़ज़ाई का लिबास) इनायत कर के फ़रमाया : **ऐ अब्दुल क़ादिर ! तमाम लोग इल्मे शरीअत व तरीक़त में तेरे मोहताज होंगे । फिर मैं हज़रते गौसे आ'ज़म عليه رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم** के हमराह हज़रते सय्यिदुना **शैख़**

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (त-बरानी)

मा'रूफ़ कर्खी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के मज़ारे पुर अन्वार पर गया, वहां हज़रते शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी قُدَسَ سِرُّهُ التُّورَانِي ने फ़रमाया :  
 يَا نِي اِي شَيْخِ مَارُوفِ! اِي سَلَامُ عَلَيْكَ يَا شَيْخِ مَعْرُوفِ! عَبْرَتَاكَ بَدْرَجَتَيْنِ  
 पर सलामती हो, हम आप से दो द-रजे बढ़ गए हैं। उन्हों ने क़ब्र में से जवाब दिया :  
 يَا نِي اِي سَلَامُ عَلَيْكَ يَا سَيِّدَ اَهْلِ رَمَانِهِ  
 अपने ज़माने वालों के सरदार ! (قلائد الجواهر ص ३९ مصر)

अल्लाह عزوجل की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी मग़ि़रत हो।

اٰمِيْنَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा बुजुर्गाने दीन

وفاत के बा'द भी अपने मज़ारात में ज़िन्दा व हयात रहते हैं जैसा कि हज़रते सय्यिदुना इमाम अहमद बिन हम्बल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ अपनी क़ब्रे अन्वर से निकल कर हज़रते सय्यिदुना गौसे आ'ज़म दस्त गीर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से बग़ल गीर हुए और हज़रते सय्यिदुना मा'रूफ़ कर्खी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने अपने रौज़ए मुबारक से आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के सलाम का इस तरह जवाब दिया कि बाहर सुनाई दिया।

जो वली क़ब्र थे या बा'द हुए या होंगे

सब अदब रखते हैं दिल में मेरे आक़ा तेरा (हदाइके बख़्शिश शरीफ़)

“अल मद्दुदु या गौस” के दस हुरू फ़ की निस्बत से  
 मज़ारात के मु-तअल्लिक़ 10 म-दनी फूल  
 मज़ारात पर हाज़िरी का तरीक़ा

(1) (औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के) मज़ाराते तय्यिबात पर

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़फ़िरत है। (जामेअ सगीर)

हाज़िर होने में पाइंती (या'नी क़दमों) की तरफ़ से जाए और कम अज़ कम चार हाथ के फ़ासिले पर मुवा-जहा में (या'नी चेहेरे के सामने) खड़ा हो और मु-तवस्सित (या'नी दरमियानी) आवाज़ में (इस तरह) सलाम अर्ज़ करे : **اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا سَيِّدِي وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ** फिर दुरूदे ग़ौसिया तीन बार, **اَلْحَمْدُ** शरीफ़ एक बार, **اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ** आ-यतुल कुसी एक बार, **سُورَةُ اِيْزٰلٰاس** सात बार, फिर “दुरूदे ग़ौसिया” सात बार, और वक़्त फुरसत दे तो **سُورَةُ يٰسِيْن** और **سُورَةُ مُلْك** भी पढ़ कर **اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ** से दुआ करे कि इलाही ! इस क़िराअत पर मुझे इतना सवाब दे जो तेरे करम के क़ाबिल है, न उतना जो मेरे अमल के क़ाबिल है और इसे मेरी तरफ़ से इस बन्दए मक्बूल को नज़्र पहुंचा। फिर अपना जो मतलब जाइज़ शर-ई हो उस के लिये दुआ करे और साहिबे मज़ार की रूह को **اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَآلِهِ** की बारगाह में अपना वसीला क़रार दे, फिर उसी तरह सलाम कर के वापस आए। (फ़तावा र-ज़विyyा “मुख़र्रजा”, जि. 9, स. 522)

### दुरूदे ग़ौसिया

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَ مَوْلَانَا مُحَمَّدٍ مَّعْدِنِ الْجُوْدِ وَالْكَرَمِ وَالِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ

(म-दनी पंजसूरह, स. 260)

### मज़ारात की ज़ियारत सुन्नत है

(2) हमारे प्यारे प्यारे आका, मक्की म-दनी मुस्तफ़ा

صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ शु-हदाए उहूद عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की मुबारक क़ब्रों की ज़ियारत को तशरीफ़ ले जाते और उन के लिये दुआ फ़रमाते।

(مُصَنَّفُ عَبْدِ الرَّزَّاقِ ج ٣ ص ٢٨١، رقم ٦٧٤٥، تفسير دُرّ مَنْشُور ج ٤ ص ٦٤٠)

फ़रमान मुस्तफ़ा صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर राज़ जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे ।  
(कन्जुल उम्माल)

## मज़ारते औलिया से नफ़अ मिलता है

(3) फु-क़हाए किराम رَحْمَةُ اللهِ السَّلَامُ फ़रमाते हैं : औलियाए किराम व बुजुगाने दीन رَحْمَةُ اللهِ السَّبِيحِينَ के मज़ारते तय्यिबात की ज़ियारत को जाना जाइज़ है वोह अपने जाइर (या'नी मज़ार पर हाज़िर होने वाले) को नफ़अ पहुंचाते हैं ।  
(رَدُّ الْمُحْتَرَجِ 3 ص 178)

## क़ब्र को बोसा न दें

(4) मज़ार शरीफ़ या क़ब्र की ज़ियारत के लिये जाते हुए रास्ते में फुज़ूल बातों में मशगूल न हो । (ऐज़न) क़ब्र को बोसा न दें, न क़ब्र पर हाथ लगाएं । (फ़तावा र-ज़विय्या "मुखर्रजा", जि. 9, स. 522, 526) बल्कि क़ब्र से कुछ फ़ासिले पर खड़े हो जाएं ।  
slami.net

## शु-हदाए किराम के मज़ारत पर सलाम का तरीक़ा

(5) शु-हदाए किराम رَحْمَةُ اللهِ السَّلَامُ के मज़ारते ताहिरात की ज़ियारत के वक़्त इस तरह सलाम अर्ज़ कीजिये : سَلَامٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَيَعْمَ عُقْبَى الدَّارِ :  
तरजमा : तुम पर सलामती हो तुम्हारे सब्र के बदले, पस आख़िरत क्या ही अच्छा घर है ।  
(फ़तावा आलमगीरी, जि. 5, स. 350)

## मज़ार पर चादर चढ़ाना

(6) बुजुगाने दीन और औलिया व सालिहीन رَحْمَةُ اللهِ السَّبِيحِينَ के मज़ारते तय्यिबात पर ग़िलाफ़ (या'नी चादर) डालना जाइज़ है, जब कि येह मक्सूद हो कि साहिबे मज़ार की वक़अत (या'नी इज़्ज़त व अ-ज़मत) अ़वाम की नज़र में पैदा हो, उन का अदब करें, उन के ब-रकात हासिल करें ।  
(رَدُّ الْمُحْتَرَجِ 9 ص 599)



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी।  
(मजमउज्जवाइद)

## मज़ार पर गुम्बद बनाना

(7) क़ब्र को पुख़्ता (या'नी पक्की) न करना बेहतर है, आम मुसल्मान की क़ब्र के गिर्द बिला मक्सदे सहीह इमारत बनाने की शरअन इजाज़त नहीं कि येह माल जाएअ करना है। अलबत्ता औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام के मज़ारात के गिर्द अच्छी अच्छी निय्यतों से इमारत व गुम्बद बनाना जाइज़ है। फ़तावा र-ज़विद्या जिल्द 9 (मुखर्जा) सफ़हा 418 पर है : “कश्फुल ग़िता” में है : “मतलिबुल मुअमिनीन” में लिखा है कि सलफ़ (या'नी गुज़श्ता दौर के बुजुर्गों) ने मशहूर उ-लमा व मशाइख़ की क़ब्रों पर इमारत बनाना मुबाह (या'नी जाइज़) रखा है ताकि लोग ज़ियारत करें और उस में बैठ कर आराम लें, लेकिन अगर ज़ीनत (या'नी ख़ूब सूरती और आराइश) के लिये बनाएं तो हुराम है। मदीनए मुनव्वरह में सहाबा (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) की क़ब्रों पर अगले ज़माने में कुब्बे (या'नी गुम्बद) ता'मीर किये गए हैं, ज़ाहिर येह है कि उस वक़्त जाइज़ करार देने से ही येह हुवा और हुजूरे अक्दस صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के मरक़दे अन्वर (या'नी मज़ारे पाक) पर भी एक बुलन्द कुब्बा (अज़ीम सब्ज़ सब्ज़ गुम्बद शरीफ़) है।

## मज़ारात पर चरागां करना

(8) अगर शम्एं रोशन करने में फ़ाएदा हो कि मौज़ए कुबूर में मस्जिद है या कुबूर सरे राह (या'नी रास्ते में) हैं या वहां कोई शख्स बैठा है या मज़ार किसी वलिय्युल्लाह या मुहक्किकीन उ-लमा में से किसी आलिम का है, वहां शम्एं रोशन करें उन की रूहे मुबारक की ता'ज़ीम

फरमाने मुस्ताफा ﷺ : جس کے پاس मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ न पढ़ा  
उस ने जफा की । (अब्दुर्ज्जाक)

के लिये जो अपने बदन की, खाक पर ऐसी तजल्ली डाल रही है जैसे  
आफ़ताब ज़मीन पर, ताकि इस रोशनी (या'नी लाइटिंग) करने से लोग  
जानें कि येह वली का मज़ारे पाक है ताकि इस से तबर्क करे और वहां  
अल्लाह ﷻ से दुआ मांगें कि इन की दुआ क़बूल हो, तो येह अम्र जाइज़  
है इस से अस्लन मुमा-न-अत नहीं, और आ'माल का मदार निय्यतों पर  
है । (फ़तावा र-ज़विय्या, "मुखर्जा", जि. 9, स. 490, ۲۰ ص ۶۳) (الْحَدِيثُ النَّبِيُّ ج ۲ ص ۶۳)

### क़ब्र का त़वाफ़

(9) ता'ज़ीम की निय्यत से क़ब्र का त़वाफ़ करना मन्अ है ।

(बहारे शरीअत, जि. 1, स. 850)

### www.क़ब्र को सज्दा करना ni.net

(10) क़ब्र को सज्दए ता'ज़ीमी करना ह़राम है और अगर  
इबादत की निय्यत हो तो क़फ़्र है ।

(माखूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 22, स. 423)

### ﴿14﴾ क़ब्र में कुरआन पढ़ने वाला नौ जवान

अबुन्नज़्र नैशापूरी عليه رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي जो कि एक मुत्तकी गोरकन थे,  
फ़रमाते हैं : मैं ने एक क़ब्र खोदी, लेकिन उस में दूसरी क़ब्र की तरफ़  
रास्ता निकल आया तो मैं ने देखा कि उम्दा लिबास में मल्बूस और  
बेहतरीन खुशबू से मुअत्तर एक हसीनो जमील नौ जवान उस में पालती  
(या'नी चौकड़ी) मारे बैठा कुरआने करीम पढ़ रहा है । नौ जवान ने मेरी  
तरफ़ देख कर फ़रमाया : क्या कियामत आ गई ? मैं ने कहा : नहीं ।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عُزَّوَجَلَّ उस पर दस  
रहमतें भेजता है। (मुस्लिम)

फ़रमाया : जहां से मिट्टी हटाई थी वहीं रख दो, तो मैं ने मिट्टी वहीं रख  
दी। (شرح الصُّدُور ص ۱۹۲)

اَللّٰهُ عُزَّوَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी मग्फ़िरत हो।

اٰمِيْنَ بِجَاوِزِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **اَللّٰهُ عُزَّوَجَلَّ** अपने नबियों,  
वलियों और मख़सूस नेक बन्दों के जिस्मों को क़ब्रों में भी सलामत रखता  
और ख़ूब इन्आमो इक्राम से मालामाल करता है, येह हज़रात अपने  
मज़ारात में भी इबादात की लज़ज़ात उठाते हैं, **اَللّٰهُ عُزَّوَجَلَّ** अपने  
प्यारों के मज़ारों को खुशबूओं से ख़ूब महकाता है और लोगों की तरगीब  
के लिये कभी आम लोगों पर इस का इज़हार भी फ़रमा देता है।

दुन्या व आख़िरत में जब मैं रहूं सलामत

प्यारे पढ़ूं न क्यूंकर तुम पर सलाम हर दम (जौके ना'त)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

### ﴿15﴾ महकती क़ब्र

हज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने अबिहुन्या رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने हज़रते  
सय्यिदुना मुगीरा बिन हबीब رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से रिवायत की, कि एक  
क़ब्र से खुशबूएं आती थीं। किसी ने साहिबे क़ब्र को ख़्वाब में देख कर  
उन से पूछा : येह खुशबूएं कैसी हैं? जवाब दिया : तिलावते कुरआन  
और रोज़े की। (کتاب التهجد وقيام الليل رقم ۲۸۷ ج ۱ ص ۳۰۵)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा, कुरआने करीम की

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बदबख्त हो गया । (इब्ने युनी)

तिलावत और रोज़ा व इबादत में बेहद ब-र-कत है और रब्बुल इज़्ज़त अपनी रहमत से अपने इबादत गुज़ार बन्दों की कब्रों को खुशबूओं से महकाता है ।

क्या महकते हैं महकने वाले

बू पे चलते हैं भटकने वाले (हदाइके बख़्शाश शरीफ)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

### ﴿16﴾ काना मुर्दा

एक बुजुर्गِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फरमाते हैं : मेरा एक पड़ोसी गुमराही की बातें किया करता था, उस के मरने के बा'द मैं ने उसे ख़्वाब में देखा कि काना है । मैं ने पूछा : येह क्या मुआ-मला है ? जवाब दिया : मैं ने सहाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) की मुबारक शान में “ऐब” निकाले, **أَبْلَاهُ** ने मुझ को “ऐबदार” कर दिया ! येह कह कर उस ने अपनी फूटी हुई आंख पर हाथ रख लिया । (شَرْحُ الصُّدُورِ ص ٢٨٠)

### हर सहाबी जन्नती है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस हिंकायत से मा'लूम हुवा कि सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की शाने अ-ज़मत निशान में नुक्ता चीनी करना बेहद ख़तरनाक है । इन मुक्तदर हज़रात के बारे में ज़बान तो ज़बान दिल में भी कोई बुरी बात नहीं लानी चाहिये । दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 1250 सफ़हात पर

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शख्स की नाक ख़ाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पड़े ।  
(हाकिम)

मुश्तमिल किताब, “बहारे शरीअत” जिल्द अक्वल सफ़हा 252 पर सदरुशशरीअह, बदरुत्तरीक़ह हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي फ़रमाते हैं : “तमाम सहाबए किराम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ अहले ख़ैर व सलाह (या'नी भलाई और तक्वे वाले) हैं और आदिल, इन का जब ज़िक्र किया जाए तो ख़ैर (या'नी भलाई) ही के साथ होना फ़र्ज़ है ।” मज़ीद आगे चल कर सफ़हा 254 पर फ़रमाते हैं : “तमाम सहाबए किराम आ'ला व अदना (और इन में अदना कोई नहीं) सब जन्नती हैं, वोह जहन्नम (में दाख़िल तो क्या होंगे उस) की भिनक (या'नी हलकी सी आवाज़ तक) न सुनेंगे और हमेशा अपनी मन मानती मुरादों में रहेंगे, महशर की वोह बड़ी घबराहट इन्हें ग़मगीन न करेगी, फ़िरिश्ते इन का इस्तिक्बाल करेंगे कि येह है वोह दिन जिस का तुम से वा'दा था, येह सब मज़मून कुरआने अज़ीम का इर्शाद है ।” आशिके सहाबा व अहले बैत, आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ف़रमाते हैं :

अहले सुन्नत का है बेड़ा पार अस्हाबे हुज़ूर

नज्म<sup>1</sup> हैं और नाउ<sup>2</sup> है इतरत<sup>3</sup> रसूलुल्लाह की

سَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

﴿17﴾ पुर असरार कूएं का कैदी

शैबान बिन हसन का बयान है : मेरे वालिद साहिब और अब्दुल वाहिद बिन ज़ैद एक जिहाद में तशरीफ़ ले गए, उन्हीं ने एक पुर

1 : सितारे

2 : कश्ती

3 : औलाद । अहले बैत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरुद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह غُرُوْحَلُ तुम पर रहमत भेजेगा । (इब्ने अदी)

असरार कूआं देखा जिस में से आवाजें आ रही थीं ! अन्दर झांका तो क्या देखते हैं कि एक शख्स तख़्त पर बैठा है और उस के नीचे पानी है, उन्होंने ने दरयाफ़्त किया : जिन्न हो या इन्सान ? जवाब दिया : इन्सान । पूछा : कहां के रहने वाले हो ? बोला : अन्ताकिया का, मेरा किस्सा येह है कि मेरे रब غُرُوْحَلُ ने मुझे वफ़ात दे दी और अब मुझ को इस कूएं में क़र्ज़ अदा न करने की वजह से कैद कर दिया है, “अन्ताकिया” के कुछ लोग मेरा ज़िक्रे ख़ैर तो करते हैं मगर मेरा दैन (या’नी क़र्ज़) नहीं चुकाते । चुनान्चे येह दोनों (या’नी मेरे वालिद साहिब और उन का रफ़ीक़) “अन्ताकिया” गए और (मा’लूमात कर के) उस पुर असरार कूएं के कैदी का दैन (या’नी क़र्ज़) चुका कर वापस उसी मक़ाम पर आए तो वहां न अब वोह शख्स था न ही कूआं ! येह दोनों हज़रात उसी पुर असरार कूएं वाली जगह पर जब रात सोए तो ख़्वाब में वोही शख्स आया और उस ने कहा : “جَزَا كَمَا اللّٰهُ عَنِّيْ خَيْرًا” (या’नी اَللّٰهُ غُرُوْحَلُ तुम दोनों को मेरी तरफ़ से बेहतरीन बदला दे) मेरा क़र्ज़ अदा होने के बा’द मेरे परवर्द गार غُرُوْحَلُ ने मुझ को जन्नत के फुलां हिस्से में दाख़िल फ़रमा दिया है ।

(شَرْحُ الصُّدُوْر ص ٢٦٧)

**मक़्रूज़ शहीद भी जन्नत में न जा सकेगा जब तक कि...**

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा’लूम हुवा, “क़र्ज़” बहुत बड़ा बोझ है, जो लोग अदाए क़र्ज़ में टालम टोल करते हैं उन को बयान कर्दा हिक़ायत से डर जाना चाहिये और क़र्ज़ ख़्वाह (या’नी जिस से क़र्ज़ लिया है उस) को अपने पास धक्के खिलाने के बजाए खुद उस के पास जा कर

**फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज़्र पर एक दुरूद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह عُزُّوَجَلُّ उस के लिये एक किरात अज़्र लिखता है और किरात उहुद पहाड़ जितना है।  
(अब्दुरज़्जाक)

शुक्रिया के साथ उस का क़र्ज़ अदा कर देना चाहिये, कहीं ऐसा न हो कि झूटमूट “आज कल” करते हुए मौत आ जाए और क़ब्र में जान फंस जाए। **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ है : “उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़े कुदरत में मेरी जान है ! अगर कोई आदमी **अल्लाह** عُزُّوَجَلُّ की राह में क़त्ल किया जाए फिर ज़िन्दा हो फिर **अल्लाह** عُزُّوَجَلُّ की राह में क़त्ल किया जाए फिर ज़िन्दा हो और उस के ज़िम्मे क़र्ज़ हो तो वोह जन्नत में दाख़िल न होगा यहां तक कि उस का क़र्ज़ अदा कर दिया जाए।” (मुसनाद इमाम अहमद ज ८ व ३४८ व ३४९ ह २००६) कोई मुसलमान मक्क़ूज़ फ़ौत हो जाए तो अज़ीजों को चाहिये कि फ़ौरन उस का क़र्ज़ अदा कर दें ताकि मर्हूम के लिये क़ब्र में आसानी हो। **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ है : “बेशक तुम्हारा रफ़ीक़ जन्नत के दरवाज़े पर अपने क़र्ज़ की वजह से रोक दिया गया है अगर तुम चाहो तो उस का क़र्ज़ पूरा अदा करो और अगर चाहो तो उसे (या'नी फ़ैत शुदा मक्क़ूज़ को) अज़ाब के हवाले कर दो।”

(المُسْتَدْرَكُ لِلْحَاكِمِ ج २ व ३२२ ह ३१/२२६)

## नमाज़े जनाज़ा से क़ब्ल ए'लान का तरीक़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! क्या ही अच्छा हो कि नमाज़े जनाज़ा पढ़ाने से क़ब्ल इमाम साहिब या कोई इस्लामी भाई इस तरह ए'लान फ़रमा दिया करें : मर्हूम के अहले ख़ानदान और दोस्त अहबाब तवज्जोह फ़रमाएं, मर्हूम ने अगर ज़िन्दगी में कभी आप की दिल आज़ारी या हक़ त-लफ़ी की हो तो इन को मुआफ़ कर दीजिये, ان شاء الله عُزُّوَجَلُّ मर्हूम

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझे तक पहुँचता है। (त-बरानी)

का भी भला होगा और आप को भी सवाब मिलेगा। आप का अगर मर्हूम पर क़र्ज़ हो और वोह मुआफ़ कर देंगे तो **اِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** आप का भी बेड़ा पार होगा। इस के बा'द इमाम साहिब निख्यत व नमाजे जनाजा का तरीक़ा भी बताएं।

वक़्त पर क़र्ज़ा अदा कर दो फ़िरो मत क़ौल से  
झूट मत बोलो बचो बेकार टालम टोल से  
صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

### ﴿18﴾ क़ब्र में आंखें खोल दीं

हज़रते सय्यिदुना अबू अली عليه رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي फ़रमाते हैं : मैं ने एक फ़कीर (या'नी **अल्लाह** के एक नेक बन्दे) को क़ब्र में उतारा, जब कफ़न खोला और उन का सर खाक पर रख दिया कि **अल्लाह** तआला इन की गुरबत (या'नी बे कसी) पर रहूम करे, फ़कीर ने आंखें खोल दीं और मुझे से फ़रमाया : **ऐ अबू अली ! तुम मुझे उस (रब्बे करीम) के सामने ज़लील करते हो जो मुझे पर खास करम फ़रमाता है ! मैं ने अर्ज़ की : ऐ मेरे सरदार ! क्या मौत के बा'द ज़िन्दगी है ? फ़रमाया : بَلْ اَنَا حَيٌّ وَكُلُّ مُحِبِّ اللهِ حَيٌّ لَانْصُرَنَّكَ بِجَاهِي عَدَا** हर प्यारा ज़िन्दा है, बेशक वोह वजाहत व इज़्ज़त जो मुझे रोजे क़ियामत मिलेगी उस से मैं तेरी मदद करूंगा। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 9, स. 433)

### औलिया बा 'दे वफ़ात भी ज़िन्दा होते हैं

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा औलियाए किराम व शु-हदाए इज़ाम رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِمْ अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा होते हैं और सब कुछ मुला-हज़ा फ़रमा रहे होते हैं : आ'ला हज़रत عليه رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हाहत है

(अबू या'ला)

फ़रमाते हैं : अल्लामा अली क़ारी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ شَرِّهِ مِشْكَات में लिखते हैं : औलियाउल्लाह की दोनों हालतों (या'नी ज़िन्दगी व मौत) में अस्लन (या'नी किसी किस्म का कोई) फ़र्क नहीं, इसी लिये कहा गया है कि वोह मरते नहीं बल्कि एक घर से दूसरे घर में तशरीफ़ ले जाते हैं । (फ़तावा

र-ज़विय्या "मुख़र्रजा", जि. 9, स. 433, (مَرْفَعَةُ الْمَفَاتِيحِ ج ٣ ص ٤٠٩ تحت الحديث ١٣٦٦)

कौन कहता है वली को, मर गए

क़ैद से छूटे वोह अपने घर गए

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَي مُحَمَّد

﴿19﴾ जब भेंस का पाउं ज़मीन में धंसा.....

क़ब्रिस्तान की सूखी घास काट कर ले जाना जाइज़ है मगर जानवरों को क़ब्रों पर चलाने चराने की शरीअत में इजाज़त नहीं । मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ عَلَيْهِ ف़रमाते हैं : इस फ़कीर (या'नी आ'ला हज़रत) رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ (अबुल्लाह तआला इस की मग़िफ़रत फ़रमाए) ने (अपने पीर भाई) हज़रते सय्यिदी अबुल हुसैन नूरी مُدَّةُ اللهِ الْعَالِي سے सुना कि हमारे बिलाद में "मारहरा मुतहहरा" (अल हिन्द) के क़रीब एक जंगल में गन्जे शहीदां है (या'नी जिस में बहुत सारे शहीद मदफून हैं उस इज्तिमाई क़ब्र के ऊपर चलता हुवा) कोई शख़्स अपनी भेंस लिये जाता था, एक जगह ज़मीन नर्म थी, नागाह (या'नी यकायक) भेंस का पाउं (ज़मीन में) जा रहा, मा'लूम हुवा यहां क़ब्र है, क़ब्र से आवाज़ आई : "ऐ शख़्स ! तूने

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझे पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عُزُّوْهُل उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है । (त-बरानी)

मुझे तकलीफ़ दी, तेरी भेंस का पाउं मेरे सीने पर पड़ा ।”

(फ़तावा र-ज़विय्या “मुख़र्रजा”, जि. 9, स. 453)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा शु-हदाए किराम  
 هَيَاةٌ هَوَاتٍ وَأَمْرٌ مِّنْكُمْ فِي هَذِهِ السَّلَامَةِ هَيَاةٌ هَوَاتٍ وَأَمْرٌ مِّنْكُمْ فِي هَذِهِ السَّلَامَةِ

शहीदों को मिली हक़ से हयाते जाविदानी है

ख़ुदा की रहमतें, जन्नत में उन की मेहमानी है

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

﴿20﴾ क़ब्र पर बैठने वाले को तम्बीह

उमारह बिन हज़्म رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : हुजूरे अक़दस  
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने मुझे एक क़ब्र पर बैठे देखा, फ़रमाया : ओ क़ब्र वाले !  
 क़ब्र से उतर आ, न तू साहिबे क़ब्र को ईज़ा दे न वोह तुझे ।

(फ़तावा र-ज़विय्या “मुख़र्रजा”, जि. 9, स. 434) इस म-दनी हिकायत से  
 वोह लोग इब्रत हासिल करें जो जनाजे के साथ क़ब्रिस्तान जाते हैं और  
 तदफ़ीन के दौरान مَعَاقِدُ اللهِ बिना तकल्लुफ़ क़ब्रों पर बैठ जाते हैं ।

﴿21﴾ क़ब्र पर पाउं रखा तो आवाज़ आई

हज़रते सय्यिदुना क़ासिम बिन मुख़ैमर رَحِمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ कहते हैं :  
 किसी शख़्स ने एक क़ब्र पर पाउं रखा, क़ब्र से आवाज़ आई :  
 اِنِّي لَمِنْكُمْ وَأَنَا لَمِنْكُمْ اِنِّي لَمِنْكُمْ وَأَنَا لَمِنْكُمْ अपनी तरफ़ हट, (या'नी दूर हो ! ऐ शख़्स मेरे पास से !)  
 और मुझे ईज़ा न दे ।

(ايضاً ص ٤٥٢، شَرْحُ الصُّدُورِ ص ٣٠١)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (हाकिम)

## ﴿22﴾ क़ब्र पर सोने वाले से साहिबे क़ब्र ने कहा.....

हज़रते सय्यिदुना अबू क़िलाबा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : मैं “मुल्के शाम” से बसरा को आता था, रात को खन्दक (या’नी खाई या गढ़े) में उतरा । वुजू किया और दो रकअत नमाज़ पढ़ी । फिर एक क़ब्र पर सर रख कर सो रहा, जब जागा तो नागाह (या’नी अचानक) सुना कि साहिबे क़ब्र शिकायत करता और फ़रमाता है कि لَقَدْ اَدْبَتْنِيْ مِنْدُ اللَّيْلِ يا’नी तूने रात भर मुझे ईज़ा पहुंचाई । (साहिबे क़ब्र ने मज़ीद फ़रमाया :) हम जानते हैं और तुम को पता नहीं, हम अमल पर कादिर नहीं, तुम ने दो रकअत जो नमाज़ पढ़ी वोह दुन्या व मा फ़ीहा (या’नी दुन्या और इस में जो कुछ है उस) से बेहतर है, फिर उस ने (मज़ीद) कहा कि अहले दुन्या को **اَللّٰهُ** तअ़ाला हमारी तरफ़ से जज़ाए ख़ैर दे जब वोह हम को ईसाले सवाब करते हैं तो वोह सवाब नूर के पहाड़ की मिस्ल हम पर दाख़िल होता है ।

(फ़तावा र-ज़विय्या “मुख़र्रजा”, जि. 9, स. 452, ३०० صُورُص)

## ﴿23﴾ उठ तूने मुझे ईज़ा दी !

हज़रते सय्यिदुना इब्ने मीना ताबेई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْوَالِي ف़रमाते हैं : मैं क़ब्रिस्तान में गया, दो रकआत पढ़ कर एक क़ब्र पर लैटा रहा । खुदा की क़सम ! मैं ख़ूब जाग रहा था कि सुना, साहिबे क़ब्र कहता है : (دَلٰلِلِ النَّبُوَّةِ لِلْبَيْهَقِيِّ ج 7 ص 40) उठ कि तूने मुझे ईज़ा दी ।

**क़ब्र पर पाउं रखना हराम है**

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हिकायत नम्बर 21-22-23 से

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझे पर रोजे जुमुआ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं कियामत के दिन उसकी शफ़ाअत करूंगा। (कन्जुल उम्माल)

मा'लूम हुवा कि क़ब्र पर पाउं रखने या सोने से क़ब्र वाले को ईज़ा होती है और बिला इजाज़ते शर-ई किसी मुसलमान को ईज़ा देना हराम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। लिहाज़ा किसी मुसलमान की क़ब्र पर पाउं न रखे, न किसी क़ब्र को रौंदे और न किसी क़ब्र पर बैठे और न ही टेक लगाए क्यूं कि इस से नबिय्ये करीम, रऊफ़ुरहीम عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالتَّسْلِيمِ ने मन्अ फ़रमाया है : दो फ़रामैने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : (1) मुझे आग की चिंगारी पर या तलवार पर चलना या मेरा पाउं जूते में सी दिया जाना ज़ियादा पसन्द है इस से कि मैं किसी मुसलमान की क़ब्र पर चलूं। (2) एक आदमी को आग की चिंगारी पर बैठा रहना यहां तक कि वोह उस के कपड़े को जला कर उस की खाल तक पहुंच जाए, उस के लिये बेहतर है इस से कि क़ब्र पर बैठे।

(صَحِيح مُسْلِمٍ ص ٤٨٣ حَدِيث ٩٧١)

**क़ब्रों को मिटा कर बनाए हुए रास्ते पर चलना हराम है**

क़ब्रिस्तान में आम रास्ते से जाए, जो रास्ता नया बना हुवा हो उस पर न चले। “रहुल मुह्तार” में है : (क़ब्रिस्तान में क़ब्रें मिटा कर) जो नया रास्ता निकाला गया हो उस पर चलना हराम है। (رَدُّ الْمُحْتَارِ ج ١ ص ٦١٢) बल्कि नए रास्ते का सिर्फ़ गुमान हो तब भी उस पर चलना ना जाइज़ व गुनाह है। (دُرِّ الْمُخْتَارِ ج ٣ ص ١٨٣)

**मज़ारात के गिर्द क़ब्रें मिटा कर**

**बनाए हुए फ़र्श पर चलना फिरना हराम**

कई मज़ाराते औलिया पर देखा गया है कि ज़ाइरीन की सहूलत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عزوجل उस पर दस रहमतें भेजता है। (मुस्लिम)

की खातिर मुसल्मानों की क़ब्रें मिस्मार कर के (या'नी तोड़ फोड़ कर) फ़र्श बना दिया जाता है, ऐसे फ़र्श पर लैटना, चलना, खड़ा होना, जि़क्रो अज़्कार और तिलावत के लिये बैठना वगैरा ह़राम है, दूर ही से फ़ातिहा पढ़ लीजिये।

### क़ब्र के क़रीब गन्दगी करना

क़ब्र पर रहने का मकान बनाना, या क़ब्र पर बैठना, या सोना, या उस पर बौल व बराज़ (या'नी पेशाब पाख़ाना) करना येह सब उमूर अशद्द (या'नी सख़्त तरीन) मक्रूह क़रीब ब ह़राम हैं। (फ़तावा र-ज़विय्या “मुख़र्रजा”, जि. 9, स. 436) सय्यिदे अ़लाम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ फ़रमाते हैं : मुर्दे को क़ब्र में भी उस बात से ईजा होती है जिस से घर में उसे अज़िय्यत होती। (الأفروتوس بمأثور الخطّاب ج ١ ص ١٢٠ حديث ٧٤٩ دار الفكر بيروت)

### मय्यित दफ़नाने के लिये क़ब्रों पर पाउं रखना पड़े तो ?

क़ब्रिस्तान में मय्यित के लिये क़ब्र खोदने या दफ़न करने जाना चाहते हैं, बीच में क़ब्रें हाइल हैं, इस हाजत के लिये इजाज़त है, फिर भी जहां तक बन पड़े बचते हुए जाएं और नंगे पाउं हों, उन अम्वात (या'नी क़ब्र वालों) के लिये दुआ इस्तिफ़ार (या'नी मग़िफ़रत की दुआएं) करते जाएं। (फ़तावा र-ज़विय्या “मुख़र्रजा”, जि. 9, स. 447) ऐसे मौक़अ पर सिर्फ़ वोही जाएं जिन को तदफ़ीन करनी है, एक भी ज़ाइद न जाए, म-सलन मा'लूम हो कि तीन काफ़ी हो जाएंगे तो चौथा वहां तक न जाए, और वोह तीन भी अगर मजबूरन क़ब्रों पर खड़े थे तो मिट्टी डालने के बा'द अज़ान व फ़ातिहा वगैरा के लिये न रुकें, फ़ौरन लौट

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बदबख़्त हो गया ।  
(इब्ने सुन्नी)

आएं और जहां यकीनी तौर पर पाउं तले क़ब्रें न हों ऐसी जगह आ कर अज़ान व फ़ातिहा की तरकीब करें ।

## क़ब्रिस्तान में च्यूंटियों को मिठाई डालना

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ किताब "मल्फूज़ाते आ'ला हज़रत" के सफ़हा 348 ता 349 से एक मा'लूमाती "अर्ज़ व इर्शाद" मुला-हज़ा हो : अर्ज़ : मुर्दा (या'नी मय्यित) के साथ मिठाई (चीनी) क़ब्रिस्तान में च्यूंटियों के डालने के लिये ले जाना कैसा है ? इर्शाद : साथ ले जाना रोटी का जिस तरह उ-लमाए किराम ने मन्अ फ़रमाया है वैसे ही मिठाई है और च्यूंटियों को (आटा या मिठाई या चीनी वगैरा) इस निय्यत से डालना कि मय्यित को तक्लीफ़ न पहुंचाएं येह महज़ जहालत है । और येह निय्यत न भी हो तो भी बजाए इस (या'नी च्यूंटियों को डालने) के मसाकीने सालिहीन (या'नी नेक व पारसा ग़रीबों) पर तक्सीम करना बेहतर है । ﴿फिर फ़रमाया﴾ : मकान पर जिस क़दर चाहें ख़ैरात करें, क़ब्रिस्तान में अक्सर देखा गया है कि अनाज तक्सीम होते वक्त बच्चे और औरतें वगैरा गुल (या'नी शोर) मचाते और मुसल्मानों की क़ब्रों पर दौड़ते फिरते हैं ।

## क़ब्र पर पानी छिड़कना

शबे बराअत में या किसी भी हाज़िरी के मौक़अ पर बा'ज लोग अपने अज़ीज़ की क़ब्र पर बिला मक़सदे सहीह महज़ रस्मी तौर पर पानी छिड़कते हैं येह इस्राफ़ व ना जाइज़ है, और अगर येह समझते हैं कि इस से मय्यित की क़ब्र में ठन्डक होगी तो इस्राफ़ के साथ साथ निरी जहालत भी है, हां मय्यित की तदफ़ीन के बा'द छिड़कने में हरज नहीं बल्कि बेहतर है । इसी तरह अगर क़ब्र पर पौदे वगैरा हैं इस लिये पानी डाला

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : جس نے کیتاब में मुज़ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे। (त-बरानी)

जब भी हरज नहीं। लेकिन येह याद रहे ! पानी डालने के लिये अगर क़ब्रों पर पाउं रख कर जाना पड़ता हो तो जाएगा तो गुनहगार होगा, बल्कि ऐसी सूरत में उजरत दे कर किसी और से भी न डलवाए।

## पुराने क़ब्रिस्तान में मकान बनाना कैसा ?

क़ब्रिस्तान वक्फ़ है और वक्फ़ में अपनी सुकूनत (या'नी रिहाइश) का मकान बनाना "वक्फ़े बे जा" है और इस (या'नी वक्फ़) में तसर्फ़े बे जा हुराम है। फिर अगर उस क़ि़ए (या'नी ज़मीन के टुकड़े। प्लोट) में कुबूर भी हों अगर्चे निशान मिट कर नापैद (या'नी बिलकुल गाइब) हो गई हों, जब तो मु-तअहद हुरामों का मज्मूआ है, (म-सलन उन नज़र न आने वाली) क़ब्रों पर पाउं रखना होगा, चलना होगा, बैठना होगा, पेशाब पाख़ाना करना होगा, और येह सब हुराम है। इस में मुसलमानों को तरह तरह से ईज़ा है और मुसल्मान भी कौन ? अम्वात (या'नी फ़ौत शुदा) कि शिकायत नहीं कर सकते, दुन्या में इवज़ (या'नी बदला या इन्तिक़ाम) नहीं ले सकते, बे वज्हे शर-ई मुसलमानों की ईज़ा **अल्लाह व रसूल** की ईज़ा है, **अल्लाह व रसूल** (عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) को ईज़ा देने वाला मुस्तहिक्के जहन्म। इसी तरह अगर क़ब्रिस्तान के करीब मकान बनाया, पाख़ाने या धोबियों के ग़लीज़ पानी का बहाव कुबूर पर रखा तो येह भी सख़्त हुराम है और जो बा वस्फ़े कुदरत उसे मन्अ न करे वोह भी मुर-तकिबे हुराम है और ब त-मए किराया (या'नी किराए के लालच में) उसे रवा (या'नी जाइज़) रखना सस्ते दामों दोज़ख़ मोल लेना (या'नी सस्ते भाव में जहन्म ख़रीदना) है, येह काम उसी शख़्स के हो सकते हैं जिस

फ़रमाने मुस्त्फ़ा صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे ।  
(कन्जुल उम्माल)

के दिल में न इस्लाम की क़द्र, न मुसलमानों की इज़्ज़त, न खुदा का ख़ौफ़, न मौत की हैबत । وَالْعِيَادُ بِاللَّهِ تَعَالَى (या'नी **اَللّٰهُ** की पनाह)

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 9, स. 409)

## पुरानी क़ब्र में हड्डियां नज़र आएं तो.....?

अगर बारिश या किसी भी सबब से क़ब्र खुल जाए और मुर्दे की हड्डियां वगैरा नज़र आने लगें तो उस क़ब्र को मिट्टी से बन्द कर देना ज़रूरी है । इस जिम्म में फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ से सुवाल जवाब मुला-हज़ा हों : **सुवाल** : क्या फ़रमाते हैं उ-लमाए दीन इस मस्अले में कि क़दीम क़ब्र अगर किसी वजह से खुल जाए या'नी उस की मिट्टी अलग हो जाए और **मुर्दे की हड्डियां** वगैरा ज़ाहिर होने लगें तो इस सूरत में क़ब्र को मिट्टी देना जाइज़ है या नहीं ? **अल जवाब** : इस सूरत में उसे मिट्टी देना फ़क़त जाइज़ ही नहीं बल्कि **वाजिब** है कि सित्रे मुस्लिम (या'नी मुसलमान का पर्दा रखना) लाजिम है ।

(फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 9, स. 403)

## ख़्वाब की बुन्याद पर क़ब्र कुशाई का मस्अला

बा'ज अवक़ात मुर्दा ख़्वाब में आ कर बताता है कि मैं ज़िन्दा हूँ ! मुझे निकालो ! या कहता है : मेरी क़ब्र में पानी भर गया है, मुझे यहां परेशानी है ! मेरी लाश किसी और जगह **मुन्तक़िल** (TRANSFER) कर दो ! वगैरा, चाहे बार बार इस तरह के ख़्वाब नज़र आएं, ख़्वाबों की बुन्याद पर "क़ब्र कुशाई" या'नी क़ब्र खोलना जाइज़ नहीं । बिलफ़र्ज किसी ने ख़्वाब की बुन्याद पर या शर-ई इजाज़त न होने के बा वुजूद क़ब्र खोल दी और मय्यित का बदन मअ कफ़न सलामत निकला, खुशबूएं



फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पदो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मगफ़िरत है ।  
(जामेअ सगीर)

आई और दीगर भी अच्छी अच्छी निशानियां दिखीं तब भी बिला इजाज़ते शर-ई क़ब्र कुशाई करने वाले गुनहगार ही ठहरेंगे, इस जिम्न में फ़तावा र-ज़विय्या शरीफ़ के “सुवाल जवाब” मुला-हज़ा हों, सुवाल : इस बारे में क्या फ़रमाते हैं कि एक औरत पूरी मुद्दते हम्ल के बा’द ब हालते हम्ल इन्तिक़ाल कर गई, दस्तूर के मुताबिक़ उसे दफ़न कर दिया गया, एक मर्दे सालेह (या’नी नेक आदमी) ने ख़्वाब देखा कि उस औरत को जिन्दा बच्चा पैदा हुवा है, अब शख़्से मज़कूर के ख़्वाब पर ए’तिमाद कर के क़ब्र खोद कर बच्चे को औरत के साथ निकालना जाइज़ है या नहीं ? अल जवाब : जाइज़ नहीं, मगर जब कोई रोशन दलील हो, पर्दा महफूज़ है, और ख़्वाब तरह तरह के होते हैं, “सिराजिया” फिर “हिन्दिय्या” में है : एक औरत के हम्ल को सात महीने हुए बच्चा उस के पेट में ह-र-कत करता था, वोह मर गई और उसे दफ़न कर दिया गया, फिर किसी ने उसे ख़्वाब में देखा कि वोह कहती है मैं ने बच्चा जना है, तो क़ब्र न खोदी जाएगी । وَاللّٰهُ تَعَالٰی اعْلَمُ , या’नी और खुदाए बरतर ख़ूब जानने वाला है ।

(फ़तावा र-ज़विय्या “मुख़र्रजा”, जि. 9, स. 405, 406)

मल्फूज़ाते आ’ला हज़रत मुख़र्रजा सफ़हा 501 ता 503 से “क़ब्र कुशाई” के मु-तअल्लिक़ निहायत अहम व इब्रत अंगेज़ “अर्ज़ व इर्शाद” मुला-हज़ा फ़रमाइये : अर्ज़ : एक क़ब्र कच्ची है, हर बार (बारिश वगैरा का) पानी भर जाता है (क्या) इस में पक्की डाट (या’नी सूराख़ बन्द करने की चीज़) लगा दें ? इर्शाद : क़ब्र पर डाट लगाने में हरज नहीं, हां खोली न जाए । मय्यित को दफ़न कर के जब मिट्टी दे दी गई तो वोह “अमानत” हो जाता है अब्लाह (عَزَّوَجَلَّ) की, उस का कश्फ़ (या’नी खोलना) जाइज़ नहीं । (क्यूं कि क़ब्र में मुर्दा) दो हाल से ख़ाली नहीं

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (अब्दुरज़्जाक)

(या तो) मुअज़्ज़ब (या'नी अज़ाब में) है या मुन्अम अलैह (या'नी ने'मत में)। अगर मुअज़्ज़ब (या'नी अज़ाब में) है तो देखने वाला देखेगा इसे, जिस से उसे (या'नी खुद देखने वाले को) रन्ज पहुंचेगा और कर कुछ नहीं सकता। और अगर मुन्अम अलैह (या'नी ने'मत में) है तो इस में उस (या'नी मय्यित) की ना गवारी है।

### क़ब्र पर बच्चे कूदते फिरते हैं

मल्फूज़ाते आ'ला हज़रत के मुअल्लिफ़ (या'नी तरतीब देने वाले) शहज़ादे आ'ला हज़रत, ताजदारे अहले सुन्नत हुज़ूर मुफ़ितये आ'जमे हिन्द हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के इर्शाद के तहत हाशिये में फ़रमाते हैं : “फ़कीर कहता है कि अगर सूत مَعَادِ اللهِ सूरते ऊला (या'नी अज़ाब वाला मुआ-मला) है तो ना गवारी और ज़ियादा होनी चाहिये और बे वजह नाहक ईज़ाए मुस्लिम हराम (और) खुसूसन ईज़ाए मय्यित, नीज़ हदीस के इर्शाद से साबित है कि “मुर्दे को क़ब्र से तक्या (या'नी टेक) लगाने से भी अज़ियत होती है।” तो مَعَادِ اللهِ महज़ अपनी ख़्वाहिश के लिये न (कि) ज़रूरत व हाज़त के लिये उस पर कुदाल चलाना और क़ब्र को खोद डालना किस क़दर सख़्त ईज़ा का बाइस होगा। आह ! मुसलमानों के क़ब्रिस्तानों की आज जो रद्दी हालत है उस पर जिस क़दर भी रोया जाए कम है। क़ब्र पर लोग बैठ कर हुक्के पीते, खुराफ़ात करते, लगव (या'नी बेकार) बातें बनाते, गालियां बकते, क़हक़हे उड़ाते हैं। ग़ैर क़ौम ही के लोगों पर बस नहीं खुद मुसलमान भी येह ना शाइस्ता बेहूदा ह-र-कतें करते हैं। बच्चे कुबूर पर खेलते कूदते फिरते हैं बल्कि गधे उन पर लौटते लीद करते हैं, बकरियां बैठती

फरमाने मुस्ताफा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढा उसे कियामत के दिन मेरी शफाअत मिलेगी ।  
(मजमउरुज्जवाहद)

मेंगनियां करती हैं । وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ ! खुदा के लिये आंखें खोलो ! एक दिन तुम्हें भी (दुन्या से) जाना है । उन मुर्दों की खातिर कुछ इन्तिजाम नहीं करते (तो) अपने ही लिये करो ।”

### ﴿24﴾ क़ब्र कुशाई करने वाला अन्धा हो गया !

बिला इजाज़ते शर-ई क़ब्र कुशाई का भयानक अन्जाम दुन्या में भी देखा जा सकता है, चुनान्चे मल्फूज़ाते आ'ला हज़रत सफ़हा 502 पर है : अल्लामा ताश कुब्रा जादा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने येह हदीस देखी कि “उ-लमाए दीन के बदन को मिट्टी नहीं खाती, बदन उन का सलामत रहता है ।” शैतान ने उन के दिल में वस्वसा डाला कि हमारे उस्ताद बहुत बड़े आलिम हैं उन की क़ब्र खोल कर देखूं कि उन का बदन किस हाल पर है ! इस वस्वसे ने उन पर ऐसा ग-लबा किया कि शब में जा कर क़ब्र खोली, देखा कफ़न भी मैला न था । जब देख चुके, क़ब्र से आवाज़ आई : “देख चुका ! **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) तुझे अन्धा करे ।” उसी वक़्त दोनों आंखें बह गईं (या'नी वोह नाबीना हो गए) ।

### ﴿25﴾ क़ब्र खोलने वाला जिन्दा दफ़न हो गया

इसी तरह ना जाइज़ तौर पर क़ब्र कुशाई करने वाले एक और शख्स का दर्दनाक अन्जाम मुला-हज़ा हो चुनान्चे आ'ला हज़रत रَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : एक औरत का इन्तिक़ाल हुवा, दफ़न कर दी गई, उस के शोहर को बहुत महबबत थी, महबबत ने मजबूर किया कि उस की क़ब्र खोल कर देखे, क्या हाल है ! एक आलिम से येह इरादा ज़ाहिर किया, उन्होंने ने मन्अ किया, न माना और उन को क़ब्रिस्तान तक साथ ले गया, आलिम ने हर चन्द मन्अ किया लेकिन उस ने क़ब्र खोली । आलिम साहिब क़ब्र के कनारे बैठे रहे, वोह नीचे उतरा देखा कि उस

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पढ़ा तहकीक वोह बदबख्त हो गया । (इब्ने सुन्नी)

औरत के दोनों पाउं पीछे से ले जा कर उस की चोटी से बांध दिये गए हैं । उस ने चाहा कि खोल दूं हर चन्द ताक़्त की मगर न खोल सका ।

“अल्लाह की लगाई हुई गिरह कौन खोल सके !” उन अल्लिम साहिब ने मन्अ फ़रमाया, न माना । दोबारा फिर जोर किया, अल्लिम साहिब ने फिर मन्अ किया कि देख इसी में खैरियत है इसे ऐसे ही रहने दे, उस ने कहा : एक बार तो और जोर कर लूं फिर जो होगा देखा जाएगा । जोर कर ही रहा था, बिल आख़िर ज़मीन धंसी और वोह (ज़िन्दा) मर्द व (मुर्दा) औरत दोनों ज़मीन में चले गए । وَالْعِيَادُ بِاللَّهِ تَعَالَى

(मल्फूज़ाते आ'ला हज़रत, स. 502, 503)

न पैदा हो ज़िद और रहे हर घड़ी सर मेरा हुक्मे शर-ई पे ख़म या इलाही तरे क़हर से मैं अमां चाहता हूं तू दे आफ़ियत कर करम या इलाही बसर ज़िन्दगी मेरी नेकी की दा'वत

में हो, निकले तयबा में दम या इलाही

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

अमा-नतन दफ़न करने का मस्अला

बा'ज़ लोग दूसरे शहरों में फ़ौत हो जाते हैं तो उन को आरिज़ी तौर पर अमा-नतन दफ़न कर दिया जाता है, फिर मौक़ए की मुना-सबत से निकाल कर उन के आबाई गाउं वगैरा में ले जा कर तदफ़ीन करते हैं येह ना जाइज़ है । इसी तरह के एक सुवाल के जवाब में मेरे आका आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “येह हराम है, दफ़न के बा'द (क़ब्र) खोलना जाइज़ नहीं ।” (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 9, स. 406)

किसी के प्लोट पर बिगैर इजाज़त तदफ़ीन

अगर लोग किसी के प्लोट या खेत वगैरा में बिगैर इजाज़ते

फ़रमाने मुस्ताफ़ा ﷺ : صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عزوجل उस पर दस रहमतें भेजता है । (मुस्लिम)

मालिक तदफ़ीन कर दें तो मालिक को इख़्तियार है कि मय्यित को निकलवा दे या ज़मीन को हमवार कर के उस पर खेती या ता'मीरात वगैरा जो चाहे करे । चुनान्चे फु-क़हाए किराम اللهُ السَّلَامُ फ़रमाते हैं : मिट्टी डालने के बा'द मय्यित को क़ब्र से न निकाला जाएगा मगर किसी आदमी के हक़ के बाइस म-सलन येह कि ज़मीन ग़स्ब की हुई हो और मालिक को इख़्तियार होगा कि मुर्दे को बाहर निकाले या क़ब्र ज़मीन के बराबर कर दे । (درمختار ج ۳ ص ۱۷۰) मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ एक सुवाल के जवाब में इसी तरह का जुज़्इय्या तहरीर करने के बा'द प्लोट के मालिक को नेकी की दा'वत देते हुए फ़रमाते हैं : येह अस्ल हुक्मे फ़िक्ही है (या'नी शरअन इजाज़त तो है), मगर मुसल्मान नर्म दिल और दूसरे मुसल्मान (पर और) खुसूसन मय्यित पर रहूम दिल होता है, (या'नी अल्लाह तआला फ़रमाता है) : رُحَمَاءُ بَيْنَهُمْ (तर-ज-मए कन्ज़ुल इमान : और आपस में नर्म दिल) अगर वोह दर गुज़र करेगा (और ना जाइज़ तौर पर दफ़न की जाने वाली मय्यित को अपनी ज़मीन में रहने देगा तो) اَعُوذُ بِكَ اَللّٰهُ (प्लोट के मालिक) की ख़ताओं से दर गुज़र फ़रमाएगा । (الاشجوبون اَنْ يُعْفِرَ اللهُ لَكُمْ (پ ۱۸ النور ۲۴) (तर-ज-मए कन्ज़ुल इमान : क्या तुम इसे दोस्त नहीं रखते कि अल्लाह तुम्हारी बख़िश करे) अगर वोह अपने मुर्दा भाई पर एहसान करेगा, اَعُوذُ بِكَ اَللّٰهُ (عزوجل) उस पर एहसान करेगा, كَمَا تَدِينُنَدَانُ (या'नी जैसा तुम करोगे वैसा ही तुम्हारे साथ किया जाएगा) अगर वोह अपने मुर्दा भाई का पर्दा फ़श न करेगा, اَعُوذُ بِكَ اَللّٰهُ (عزوجل) उस की पर्दा पोशी करेगा । مَنْ سَتَرَ سَتْرَهُ اللهُ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुन्न पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह عُزُّوْحَلُّ तुम पर रहमत भेजेगा । (इन्ने अदी)

पर्दा पोशी करेगा) अगर वोह अपने मुर्दा भाई की क़ब्र का एहतिराम करेगा, **اَللّٰهُ** (عُزُّوْحَلُّ) इस की जिन्दगी व मौत में इसे एहतिराम बख़्शेगा । **اَللّٰهُ** (عُزُّوْحَلُّ) बन्दे की **اَللّٰهُ فِى عَوْنِ الْعَبْدِ مَا كَانَ الْعَبْدُ فِى عَوْنِ اَخِيهِ** (عُزُّوْحَلُّ) बन्दे की मदद फ़रमाता है जब तक बन्दा अपने भाई की मदद करता है) **وَاللّٰهُ تَعَالَى اعْلَم**

(फ़तावा र-ज़विय्या “मुख़र्रजा”, जि. 9, स. 379, 380)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبِ ! صَلَّ اللهُ تَعَالَى عَلٰى مُحَمَّدٍ

**मय्यित के साथ माल दफ़्न हो गया, क्या करे ?**

अगर किसी की रक़म वगैरा मय्यित के साथ दफ़्न हो गई तो उस को निकालने के लिये क़ब्र कुशाई की इजाज़त है । चुनान्चे फु-क़हाए किराम **رَحْمَتُهُمُ اللهُ السَّلَام** फ़रमाते हैं : औरत को किसी वारिस ने ज़ेवर समेत दफ़्न कर दिया और बा'ज वु-रसा मौजूद न थे उन वु-रसा को क़ब्र खोदने की इजाज़त है । किसी का कुछ माल क़ब्र में गिर गया, मिट्टी देने के बा'द याद आया तो क़ब्र खोद कर निकाल सकते हैं अगर्चे वोह एक ही दिरहम हो । (फ़तावा आलमगीरी, जि. 1, स. 167)

**“ग़ियारते कुबूर शुब्बत है” के चौदह हुरूफ़ की निस्बत से 14 म-दनी फूल**

(1) कुबूरे मुस्लिमीन की ज़ियारत सुन्नत और मज़ारते औलियाए किराम व शु-हदाए इज़ाम **رَحْمَتُهُمُ اللهُ السَّلَام** की हाज़िरी सआदत बर सआदत और उन्हें ईसाले सवाब मन्दूब (या'नी पसन्दीदा) व सवाब ।

(फ़तावा र-ज़विय्या “मुख़र्रजा”, जि. 9, स. 532)

**क़ब्रिस्तान में सलाम करने का तरीक़ा**

(2) इस तरह खड़े हों कि क़िब्ले की तरफ़ पीठ और क़ब्र वालों के चेहरों की तरफ़ मुंह हो, इस के बा'द तिरमिज़ी शरीफ़ में बयान कर्दा येह सलाम कहिये :

السَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا أَهْلَ الْقُبُورِ يَغْفِرُ اللهُ لَنَا وَلَكُمْ أَنْتُمْ سَلَفْنَا وَنَحْنُ بِالْآثَرِ

**फ़रमान मुस्ताफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शख्स को नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पड़े ।  
(हाकिम)

**तरजमा :** ऐ क़ब्र वालो ! तुम पर सलाम हो, **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ हमारी और तुम्हारी मग़िफ़रत फ़रमाए, तुम हम से पहले आ गए और हम तुम्हारे बा'द आने वाले हैं ।

(त्रिम्झी ज २ व २२९ حدिथ १०००)

**अरबों मर्हूमों से दुआए मग़िफ़रत ह्वासिल करने का विद**

(3) जो क़ब्रिस्तान में दाख़िल हो कर येह दुआ पढ़े:

**اَللّٰهُمَّ رَبَّ اَلْاَجْسَادِ الْبَالِيَةِ وَالْعِظَامِ النَّخْرَةِ الَّتِي خَرَجَتْ مِنَ الدُّنْيَا وَهِيَ بِكَ**  
तरजमा : “ऐ **اَللّٰهُ** ! (ऐ) गल जाने वाले जिस्मों और बोसीदा हड्डियों के रब ! जो दुन्या से ईमान की हालत में रुख़सत हुए तू उन पर अपनी रहमत फ़रमा और उन को मेरा सलाम पहुंचा ।” तो (हज़रते सय्यिदुना) आदम (عليه السلام) से ले कर इस (दुआ के पढ़ते) वक़्त तक जितने मुअमिन फ़ौत हुए सब उस (या'नी दुआ पढ़ने वाले) के लिये दुआए मग़िफ़रत करेंगे ।  
(شَرْحُ الصُّدُورِ ص २२६)

(4) अगर क़ब्र के पास बैठना चाहें तो साहिबे क़ब्र के मर्तबे को मल्हूज़ रख कर बा अदब बैठ जाइये ।  
(رَدُّ الْمُحْتَارِ ج ३ ص १७९)

**ज़ियारते कुबूर के अफ़ज़ल अवक़ात**

(5) क़ब्रों की ज़ियारत के लिये येह चार दिन बेहतर हैं : पीर, जुमा'रात, जुमुआ, हफ़ता । (फ़तावा आलमगीरी, जि. 5, स. 350) (6) जुमुआ के दिन बा'दे नमाज़े सुब्ह ज़ियारते कुबूर अफ़ज़ल है । (फ़तावा र-ज़विय्या मुखर्रजा, जि. 9, स. 523) (7) रात को तन्हा क़ब्रिस्तान न जाना चाहिये । (ऐज़न) (8) **मु-तबर्क** (या'नी ब-र-कत वाली) रातों में ज़ियारते कुबूर अफ़ज़ल है खुसूसन शबे बराअत । (फ़तावा आलमगीरी, जि. 5, स. 350) (9) इसी तरह **मु-तबर्क** (या'नी ब-र-कत वाले) दिनों में भी ज़ियारते कुबूर अफ़ज़ल है म-सलन ईदैन (या'नी ईदुल फ़ि़र और बक़र ईद), 10 मुहर्रमुल ह़राम और अ-श-रए ज़िल ह़िज़्जा (या'नी जुल ह़िज़्जा के इब्तिदाई 10 दिन) (ऐज़न)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरुद पढ़ो कि तुम्हारा दुरुद मुझ तक पहुंचता है ।  
(त-बरानी)

## क़ब्र पर अगरबत्ती जलाना

(10) क़ब्र के ऊपर “अगरबत्ती” न जलाई जाए इस में सूए अदब (या’नी बे अ-दबी) और बद् फ़ाली है (और इस से मय्यित को तकलीफ़ होती है) हां अगर (हाज़िरीन को) खुशबू (पहुंचाने) के लिये (लगाना चाहें तो) क़ब्र के पास ख़ाली जगह हो वहां लगाएं कि खुशबू पहुंचाना महबूब (या’नी पसन्दीदा) है

(मुलख़्ख़सन फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 9, स. 482, 525)

## क़ब्र पर मोमबत्ती रखना

(11) क़ब्र पर चराग़ या जलती मोमबत्ती वगैरा न रखे कि येह आग़ है, और क़ब्र पर आग़ रखने से मय्यित को अज़िय्यत होती है, हां अगर आप के पास, “चार्जर” टॉर्च या टॉर्च वाला मोबाईल फ़ोन न हो, गवर्नमेन्ट की बत्तियां भी न हों या बन्द हों और रात के अंधेरे में राह चलने या देख कर तिलावत करने के लिये रोशनी मक्सूद हो, तो क़ब्र के एक जानिब ख़ाली ज़मीन पर मोमबत्ती या चराग़ रख सकते हैं, जब कि वोह ख़ाली जगह ऐसी न हो कि जहां पहले क़ब्र थी अब मिट चुकी है ।

(12) आ’ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ نक्ल फ़रमाते हैं : सहीह मुस्लिम शरीफ़ में हज़रते अम्म बिन आस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी, उन्होंने ने दमे मर्ग़ (या’नी ब वक्ते वफ़ात) अपने फ़रज़न्द से फ़रमाया : “जब मैं मर जाऊं तो मेरे साथ न कोई नौहा करने वाली जाए न आग जाए ।”

(صَحِيحُ مُسْلِمٍ ص ٧٥ حَدِيثُ ١٩٢) फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 9, स. 482)

## जिस क़ब्र का पता न हो कि मुसल्मान की है या काफ़िर की

(13) जिस क़ब्र का येह भी हाल मा’लूम न हो कि येह मुसल्मान की है या काफ़िर की, उस की ज़ियारत करनी, फ़ातिहा देनी हरगिज़ जाइज़ नहीं



फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पड़े ।  
(ह़ाकिम)

कि क़ब्रे मुसलमान की ज़ियारत सुन्नत है और फ़ातिहा मुस्तहब, और क़ब्रे काफ़िर की ज़ियारत ह़राम है और उसे ईसाले सवाब का क़स्द कुफ़्र ।  
(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 9, स. 533)

(14) अपने लिये कफ़न तय्यार रखे तो हरज नहीं और क़ब्र खुदवा रखना बे मा'ना है, क्या मा'लूम कहां मरेगा ।  
(दُرْمُخْتَار ج 3 ص 183)

हों बारे गुनह से न ख़जिल दोशे अज़ीज़ां

लिल्लाह मेरी ना श कर ऐ जाने चमन फूल (हदाइके बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوْا عَلَي الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَي مُحَمَّد

### येह रिशाला षढकर दूसरे की दे डीजिये

शादी गुमी की तक़ीबात, इज्तिमाआत, ए'रस और जुलूसे मीलाद वगैरा में मक-त-बतुल मदीना के शाएअ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोहफ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने महल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये ।

### माخذ و مراجع

مطبوعه	کتاب	مطبوعه	کتاب
دارالمعرفه بیروت	سنن ابن ماجه	دارابن حزم بیروت	صحیح مسلم
دارالمعرفه بیروت	مشترک	دارالکتب العلمیه بیروت	شعب الایمان
دارالفکر بیروت	الفردوس بما ٔثور الخطاب	دارالفکر بیروت	مسند امام احمد
دارالکتب العلمیه بیروت	مصنف عبدالرزاق	دارالفکر بیروت	معجم الاوسط
دارالکتب العلمیه بیروت	کنز العمال	الکتبیه العصریه بیروت	موسوعه ابن ابی الدنیا
دارالکتب العلمیه بیروت	حدیة الاولیاء	دارالکتب العلمیه بیروت	تاریخ بغداد
دارالکتب العلمیه بیروت	دراک العیوة	دارالفکر بیروت	مرقاة المفاتیح
دارالفکر بیروت	فتاویٰ عالمگیری	مرکز اہلسنت یرکات رضاہند	شرح الصدور
دارالمعرفه بیروت	درمختار	سر دارآباد	حدیث نمذیہ
دارالمعرفه بیروت	رد المحتار	رضافاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور	فتاویٰ رضویہ



الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ إِنَّا نَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## सुन्नत की बहारे

التَّحْمِيلُ لِلَّهِ مَرْوَمٌ तस्वीरे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा 'वते इस्लामी के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती है, हर जुमा'रात इरा की नमाज के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ्तावार सुन्नतों भरे इन्तिमाअ में रिजाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निव्वतों के साथ सारी रात गुजारने की म-दनी इल्तिजा है। अशिकवने रसूल के म-दनी क़ाफिलों में ब निव्वते सवाब सुन्नतों की तरबिब्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िके मदीना के ज़रीए म-दनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के इब्तदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहाँ के ज़िम्मेदार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, إِنَّ شَاءَ اللَّهُ مَرْوَمٌ। इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुहने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है। إِنَّ شَاءَ اللَّهُ مَرْوَمٌ।" अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये "म-दनी इन्आमात" पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये "म-दनी क़ाफिलों" में सफ़र करना है। إِنَّ شَاءَ اللَّهُ مَرْوَمٌ।

## मक-त-सतुल मदीना की शाखें

- मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफिस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429
- देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560
- नागपूर : ग़ीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़े नगर रोड, मोमिन पुा, नागपूर : (M) 09373110621
- अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेसन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385
- हैदराबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुा, हैदराबाद फ़ोन : 040-24572786
- हुब्ली : A.J. मुशोल कोम्प्लेक्ष, A.J. मुशोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक, फ़ोन : 08363244860

## मक-त-सतुल मदीना

दा 'वते इस्लामी



फैज़ाने मदीना, श्री कोनिया बागीचे के सामने, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया  
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net